समता कथा माला पुष्पांक-1

चमत्कार

श्री धर्मेशमुनिजी म. सा.

प्रकाशक
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, बीकानेर (राज.)

❖ समता कथा माला पुष्पांक-*1*

❖ चमत्कार

❖ श्री धर्मेशमुनिजी म.सा.

❖ प्रथम संस्करण : मार्च, *2008, 3100* प्रतियाँ
द्वितीय संस्करण : अक्टूबर, *2012, 1100* प्रतियाँ
तृतीय संस्करण : मार्च, *2013, 1100* प्रतियाँ

❖ मूल्य : *10/-*

❖ अर्थ-सहयोगी :
स्व. श्रीमती सुगनदेवी-स्व. श्री पन्नालालजी कटारिया
कटारिया परिवार, रतलाम (मध्यप्रदेश)

❖ प्रकाशक :
श्री अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग
श्री जैन पी.जी. कॉलेज के सामने, नोखा रोड़,
बीकानेर-334401(राज.)
फोन: *0151-2270261, 3292177, 0151-2270359 (Fax)*
visit us : www.shriabsjainsangh.com
e-mail : absjsbkn@yahoo.co.in

❖ आवरण सज्जा व मुद्रक :
तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर
दूरभाष : *9314962475*

प्रकाशकीय

शासन प्रभावक विद्वान् श्री धर्मेशमुनिजी म.सा. द्वारा रचित **चमत्कार** साहित्य निर्धन बालक के रंक से राजा बनने तक के सफर की कहानी है।

उक्त कहानी में हरिया नाम का एक बालक है, जो अहीछत्रा नगरी के श्रेष्ठी श्री हजारीमल के यहाँ नौकर का कार्य करता था। परन्तु उसके भाग्य में ऐसा चमत्कार होता है कि वह हरिया से चन्देरी नगरी का राजा हरिसिंह बन जाता है।

कहानी के मूलभाव में यही प्रेरणा दी गई है कि कभी भी किसी दूसरे व्यक्ति को तुच्छ समझकर उसका उपहास या उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि भाग्य का कोई पता नहीं कब, कैसे बदल जाये और साधारण को असाधारण और असाधारण को साधारण बना दे अर्थात राजा को रंक और रंक को राजा बना दे। यह तो इस कहानी की प्रथम बात हुई, दूसरी महत्त्वपूर्ण सीख यह बताती है कि भाग्य या चमत्कार से रंक से राजा तो बन जाता है, परन्तु उस पद पर रहते हुए उस पद की गरिमा बनाये रखना बहुत बड़ी कौशलता है।

साहित्य की भाषा इतनी सहज एवं सरल है कि बाल, युवा, वृद्ध सभी को पढ़ने में रोचकता महसूस होगी। अपने नाम एवं शीर्षक की सार्थकता को सिद्ध करते हुए

जिस शैली में इसकी रचना की है वह न केवल हृदय को स्पर्श करती है अपितु और अधिक जिज्ञासा उत्पन्न करती है यही महान् रचनाकार की महती सफलता है।

श्रद्धेय श्री धर्मेशमुनिजी म.सा. द्वारा लिखित प्रेरक कहानी समाज के सामने प्रस्तुत करते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है। इस पुस्तक से हम कहानियों की पुस्तकों की श्रृंखला **समता कथा माला** के रूप में प्रारम्भ करने जा रहे है जिसके प्रथम भाग का द्वितीय संस्करण है। भविष्य में इसके अंतर्गत और भी पुस्तकों का प्रकाशन किया जायेगा।

उक्त साहित्य के प्रकाशन में समाज के धर्मनिष्ठ स्व. श्रीमती सुगनदेवी पन्नालालजी कटारिया परिवार रतलाम ने सहयोग प्रदान किया है तदर्थ हम उनके अत्यंत आभारी है। विश्वास है कि सत्साहित्य के प्रकाशन में आपका निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

इसी मंगलमनीषा के साथ.....

राजमल चौरड़िया

संयोजक–साहित्य प्रकाशन समिति

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर

अर्थ सहयोगी परिचय

उदारमना, सरल स्वभावी, रतलाम निवासी स्व. श्री पन्नालालजी–स्व. श्रीमती सुगनदेवी कटारिया धर्मनिष्ठ दम्पत्ती थे। स्व नाम धन्य सेठ श्री धुलचंदजी कटारिया के सुपुत्र श्री पन्नालालजी कटारिया के 6 पुत्र श्री अनोखीलालजी–श्रीमती नगीनादेवी, श्री मनोहरलालजी–श्रीमती सुमनदेवी, श्री कान्तिलालजी–श्रीमती आशादेवी, श्री मदनलालजी–श्रीमती सुशीलादेवी, श्री रतनलालजी–श्रीमती मंजूदेवी एवं श्री अशोककुमारजी–श्रीमतीचंदादेवी कटारिया है एवं तीन पुत्रियाँ श्रीमती विमलादेवी–स्व. श्री झमकलालजी गाँधी, श्रीमती निर्मलादेवी–श्री जवेरीलालजी पिरोदिया, श्रीमती पुष्पादेवी–श्री पारसमलजी पिरोदिया एवं पौत्र–पौत्रियों व दोहित्र–दोहित्रियों से भरा–पूरा परिवार है।

आपका परिवार अनेकों धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से जुड़ा हुआ है। आपके परिवार द्वारा श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा संचालित अनेकों प्रवृत्तियों में

सहयोग दिया गया है जो हम सभी के लिये प्रेरणा का स्रोत है। आप ने अपने सम्पूर्ण परिवार को जिस प्रकार से धार्मिक संस्कार प्रदान किये वे सराहनीय है।

आपका परिवार समाज सेवा के साथ–साथ प्रमाणिक सौने–चाँदी के व्यवसाय एवं कुशल उद्योगपति परिवारों में माना जाता है जिनका व्यवसाय रतलाम सहित देश के अनेक प्रमुखों नगरों में गतिमान है। आपके परिवार का व्यवसाय अपनी नैतिक, गुणवत्ता व कर्मनिष्ठा के लिये विख्यात है। आपका सम्पूर्ण परिवार श्री साधुमार्गी जैन संघ, रतलाम के प्रमुख घरों में से एक है। आपके द्वारा स्थानीय समाज के अनेक कार्यों में अपना सहयोग प्रदान किया है। आपका सम्पूर्ण परिवार आचार्य श्री नानेश एवं वर्तमान आचार्य श्री रामेश के प्रति श्रद्धा भावनासे ओतप्रोत है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में आपके परिवार का सहयोग प्राप्त हुआ। अतः ससंघ परिवार आभारी है और हम प्रार्थना करते हैं कि कटारिया परिवार संघ, समाज एवं शासन की सेवा करता हुआ फलता–फूलता रहे इन्हीं शुभकामनाओं के साथ.....!

चमत्कार

(1)

यत्र–तत्र–सर्वत्र एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है और समय–समय पर कर्णगोचर होती ही रहती है। वह है 'चमत्कार को नमस्कार'। क्योंकि हर सामान्य से सामान्य और विशिष्ट से विशिष्ट व्यक्ति भी जो–कुछ भी प्रवृत्ति करता है उसके पीछे कुछ–न–कुछ प्रयोजन अवश्य संलग्न रहता है। चाहे वह प्रवृत्ति सामान्य ही क्यों न हो। इसके लिये नीति वचन भी यही निर्देश देते हैं कि

"अप्रयोजने मंदो पि न गम्यते।"

वह प्रयोजन होता है उस प्रवृत्ति अर्थात् क्रिया का परिणाम अथवा फल। जब वह प्राप्त नहीं होता है तो व्यक्ति हताश व दुःखित हो उठता है और कोसने लगता है अपने भाग्य को और पश्चात्ताप करता है अपनी मेहनत पर। यदि अपने पुरुषार्थ या मेहनत का सामान्य फल भी प्राप्त हो जाता है तो वह प्रसन्नता से झूम उठता है और अपने पुरुषार्थ व प्रवृत्ति को सार्थक मानकर आत्म–संतुष्टि

का अनुभव करता है। और यदि उसी प्रवृत्ति का उसको अचिंत्य लाभ अथवा फल प्राप्त हो जाता है तो उसके लिये वह चमत्कार रूप में सिद्ध हो जाता है।

श्रेष्ठी हजारीमल अहिछत्रा नगरी में रहता था। जो इसी भारत–भू पर चम्पा, उज्जैनी, कनकावती, रत्नपुरी आदि प्रसिद्ध नगरियों की तरह शोभायमान थी। वहाँ का राजा जितशत्रु न्याय, नीति, दया, करुणादि गुणों से सम्पन्न एवं प्रजावत्सल था। वह राजवैभव को अपने सुखोपभोग का साधन ही नहीं मानता था। उसका विश्वास इसी बात पर था कि पुण्यानुबंधी पुण्य से ही यह सुख–वैभव प्राप्त हुआ है। उसको यदि अपने विषय–भोग, ऐशो–आराम में ही खर्च किया जाय तो वह पुण्यानुबंधी पाप में परिणत होता हुआ जीवन के पतन के साथ दुःखानुभूति कराने वाला और दुर्गति प्रदाता बन जायेगा। यदि उसको पुण्य कार्य में, धर्मकार्य में उपयोग किया जाय तो इस भव, परभव दोनों में हितावह बनता हुआ आनन्दानुभूति बढ़ाने वाला होगा।

इसी चिंतन के आधार पर वह उस राज्य निधान का उपयोग अपने एवं अपने परिवार के लिये उतना ही व्यय करता था जिससे सुखद जीवनयापन के साथ पद की गरिमा भी कायम रह जाये ताकि प्रजा का धन प्रजा के हितसाधन में उपयोगी हो सके। इस उद्देश्य से उसने अपने राज्य में हर वर्ग के प्राणी की सुख–सुविधाओं को

ध्यान में रखते हुए तालाब, पाठशालाएँ, धर्मशालाएँ, बाग–बगीचे यातायात की सुविधा हेतु विशाल राजपथ व ऐसे साधन, जिनसे सुदूर प्रान्तों से व्यापारी निर्भयतापूर्वक आ–जा सकें और जीवनोपयोगी बड़ी से बड़ी व छोटी से छोटी वस्तुओं का क्रय विक्रय कर सकें, साथ ही गरीब से गरीब, साधारण से साधारण व्यक्ति कोई भूखा न सोये इस उद्देश्य से बड़ी–बड़ी दानशालाएं खुलवा रखी थी। साथ ही पशु भी भूखा–प्यासा न रहे, इसके लिये स्थान–स्थान पर गौशाला के निर्माण के साथ ही राज्य के चारों ओर विशाल वनराजि की सुरक्षा का प्रबन्ध कर रखा था।

इन सबके कारण वहाँ की प्रजा अमन–चैन का जीवन व्यतीत करती हुई परमार्थ कार्यों में भी बढ़–चढ़ कर भाग लेने को तत्पर रहती थी। ऋषि–मुनियों के सत् सान्निध्य का लाभ उठाती हुई दीन–अभ्यागतों को दान–पुण्य करने, सहायता पहुँचाने हेतु सदा तत्पर रहती।

"अतिथि देवो भव" के संस्कार से आये हुए अतिथियों के सत्कार हेतु उनके द्वार सदा खुले रहते थे। संतों का लाभ उठाते रहने के कारण उनके मन में पापभीरुता, परदुःखकातरता के शुभ भाव लहराते रहते। ठगाई, चोरी, अन्याय, लूट–खसोट आपाधापी के क्रूर संस्कारों से दूर रहते हुए सर्व वर्ग के सदस्य भाईचारे की अनुभूति के साथ एक–दूसरे के सुख–दुःख में सहायक बनते हुए सुखद जीवनयापन करते थे।

राजभवन के साथ ही राजपथ से जुड़ी राजप्रमुखों की विशाल अट्टालिकाएं, फिर श्रेष्ठिवर्यों की विशाल हवेलिएं और उनमें निर्मित विशाल व्यापारिक प्रतिष्ठान राज्यश्री की अभिवृद्धि में चार चाँद लगा रहे थे। जिनके सुदूर प्रान्तों में भी व्यापारिक प्रतिष्ठान थे वे भी राज्य की महिमा बढ़ा रहे थे। इतना ही नहीं, राज्य में हर वर्ग का इन्सान अपनी–अपनी कला कौशलता से राज्य की गरिमा को सुदूर राज्यों में भी महिमा मंडित करने हेतु तत्पर था।

(2)

श्रेष्ठी हजारीमल की भी उसी राज्य पथ पर श्रेष्ठिवर्यों की हवेलियों के मध्य विशाल हवेली, जिसमें बड़े–बड़े गद्दे, तकियों से सुसज्जित व्यापारिक प्रतिष्ठान, दुकानें थी, जहाँ लाखों का प्रतिदिन लेन–देन चलता था। सुदूर प्रान्तों से लोग ब्याज पर धन ले जाते थे और पुनः जमा कराते थे जिससे श्रेष्ठी हजारीमल के सुख–वैभव में कोई कमी नहीं थी। लेकिन श्रेष्ठी हजारीमल प्रवृत्ति का बड़ा कंजूस था। जिसके कारण वह पैसों को परमेश्वर मानकर हर समय उनकी सार–संभाल में ही लगा रहता था। लक्ष्य एक ही रहता कि जो कमाया है उसमें बढ़ोतरी होती रहे। उसमें तो उसको खुशी का अनुभव होता पर उसमें किसी प्रकार की कमी ना आ जाये इसके लिये हर समय सजग रहता।

हालांकि उसके परिवार में वह और उसकी पत्नीं दो व्यक्ति ही थे पर कुछ समय बाद उसके घर में एक पुत्री का जन्म होते ही उसकी कंजूसाई और ज्यादा बढ़ गई। अब तो रात–दिन यही चिंतन करता रहता कि यह पुत्री क्या, सीने पर शिला आकर गिर गई। अब इसको बड़ी करना, फिर उसकी शादी करनीं सब में कितना पैसा खर्च हो जायेगा। इसी चिंता से हर समय चिंतित रहता हुआ यही सोचता रहता कि हर कार्य ऐसी युक्ति से करना चाहिए ताकि कम से कम पैसा खर्च हो और कार्य भी निवृत हो जाय। इसलिये दुकान पर भी बिना किसी नौकर के छोटे से छोटा काम, सभी अपने हाथ से कर लेता। साथ ही इतनी सजगता रखता कि किसी मेहमान का पाला नहीं पड़ जाये।

इसी सूमवृत्ति के कारण घर में भी बेचारी सेठानी का बेहाल था। सभी काम उसे अपने हाथों से निपटाने पड़ते थे। अपनी इच्छा के अनुसार न तो कभी वह अच्छा खा सकती थी, न अच्छा पहन सकती थी और न घर आये मेहमान का दिल खोल कर स्वागत ही कर सकती थी। हाँ, इतना जरूर था कि श्रेष्ठी हजारीमल उससे पूरा प्रेम रखता था। बोली में इतना मधुर व चतुर था कि सेठानी को उसका सूमपना अखरता नहीं था। फिर भी आखिर नारी ही तो थी। आस–पड़ोस की सेठानियों को देखकर मन में आ ही जाता कि कम–से–कम ज्यादा नहीं तो घर

में एक नौकर तो होना आवश्यक है ताकि वह मेरा भी सहयोग कर सके और इस प्यारी बिटिया को भी घुमा–फिरा कर इसका मनोरंजन कर सके। इसके लिये वह श्रेष्ठी हजारीमल को समय–समय पर चेताती रहती।

श्रेष्ठी हजारीमल अपनी वाक्पटुता से उस बात को टालते हुए ऊपरी आश्वासन देता और कहतौंतुम निश्चिंत रहो, मैं भी जानता हूँ तुम्हारे कष्ट को। मौका आने दे, कोई विश्वासु व्यक्ति मिल जाये ताकि वह घर–दुकान का काम भी संभाल ले व अपनी प्यारी बिटिया की सेवा भी कर ले और पैसा भी खर्च न करना पड़े। साथ ही घर पर रखने में कोई खतरा भी न हो। सेठानी भी सेठजी की मीठी बातों से आश्वस्त होकर नौकर के इंतजार में समय निकाल रही थी।

सहज एक दिन दस–बारह साल का बच्चा सेठजी की दुकान पर बड़ी दीनता दिखाता हुआ कहने लगौंसेठजी ! बड़ी जोर से भूख लगी है। दिन–भर हो गया, कुछ भी खाने को नहीं मिला। आप दया करके कुछ खाने को दीजिए, आपका बड़ा उपकार होगा। मैं बड़ा दुःखी हूँ। माता–पिता दोनों मुझे छोड़कर परलोकवासी हो गये, मैं अनाथ हूँ, मेरा कोई संरक्षक नहीं है। दया कीजिए, कुछ दीजिए खाने को।

बच्चे की यह दीनताभरी आवाज सेठानी के कान में भी पड़ी। वह इस आवाज को सुनकर द्रवित होती हुई

बाहर आई। देखा, बच्चा दिखने में गोरा–चिट्टा, दिव्य ललाट, बड़ा विनम्र व बोली का बड़ा मधुर, सहज है। उसके मन में वात्सल्य भाव उमड़ पड़ा। मानों वह उसका ही लाड़ला हो। बड़े स्नेह भाव से उसको भीतर बुलाया और पूछने लगी उसका परिचय। ज्ञात हुआ कि वास्तव में यह अनाथ है और लगता है किसी अच्छे खानदान का है। लेकिन भाग्य का रूठा आज दर–दर की ठोकरें खा रहा है।

सेठानी ने बड़ी आत्मीयता से पूछाँबेटा, क्या तू मेरे पास रह सकता है। सेठानी के मुँह से बेटा शब्द सुनते ही तो वह इतना भावविल हो गया कि मानो उसे अपनी जन्मदात्री माँ ही मिल गई। वह लपक कर उसकी गोदी से चिपक गया और आँखों से अश्रु बहाता हुआ बोलाँमाँ, आज मैं धन्य हो गया। आज तेरे मुँह से बेटा शब्द सुनकर मेरी जन्मदात्री माँ, जो मुझे मझधार में छोड़कर मृत्यु के गाल में समा गई थी, उसकी याद ताजा हो गई। आज से तुझे मैंने अपनी माँ माना है। अब और कुछ नहीं चाहता, सिर्फ यही चाहता हूँ कि तेरी वात्सल्यभरी ममतामयी गोद नहीं छूटे और मैं भी तेरे बेटे की तरह ही सेवा करके अपना जीवन धन्यँ बनाऊगा। बस, माँ, मैं और कुछ नहीं चाहता। बस, तू मुझे अपना ले। इधर सेठजी भी दोनों की बात सुनकर भीतर आये और इस दृश्य को देखकर भावविल हुए बिना नहीं रहे। उनके हृदय में भी करुणा

व दया का □ात प्रवाहित हो उठा। प्रकृति से भले कंजूस थे, पर आखिर तो इंसान थे। उसका गोरा भद्रिक चेहरा देखकर विश्वास हो गया कि वास्तव में यह किसी अच्छे खानदान का है लेकिन भाग्य का रूठा दर–दर की ठोकरें खा रहा है। अन्य बातें सब गौण करके मानवता के नाते भी यदि इसको रख लिया जाय तो कोई नुकसान नहीं है। साथ ही इसको देखकर हमारे अंतर हृदय में ऐसी ही सहज अपनत्व की हिलोर उठ रही है कि मानों यह हमारा ही पारिवारिक सदस्य हो।

सेठजी ने सेठानी के हृदय के भाव भी जाने और दोनों के एकमत होते ही अपने घर में रखने का निश्चय करते हुए बोलेंबेटा ! क्या तू यहाँ रह जायेगा ? तेरा नाम क्या है ? श्रेष्ठी हजारीमल के मुँह से वात्सल्यामृत से अनुरंजित बेटा शब्द सुनते ही तो वह भावविभोर होकर चरणों में झुक कर बोलेंपिताश्री, आज से मैं धन्य हो गया। मेरे जन्म के माता–पिता तो मुझे छोड़कर मृत्यु के ग्रास हो गये, उसके बाद दर–दर की ठोकर खाते हुए, तिरस्कारभरे वचनों को सहन करते हुए जीवनयापन कर रहा था। उसके बाद आज पहली बार आपके मुँह से बेटा शब्द सुनकर मैं धन्य हो गया। मेरे जन्म के माता–पिता तो मुझे हरिया नाम से संबोधित करते थे।

आज से आप ही मेरे माता–पिता हैं। आप जिस नाम से पुकारें उसी नाम से हर–पल मैं आपकी सेवा में

हाजिर होकर अपना अहोभाग्य मानूँगा। बस, मेरी एक ही प्रार्थना है कि मुझे आप अपना बेटा मानकर ही चरणसेवा प्रदान करके अनुगृहीत करें। मैं यह विश्वास दिलाता हूँ कि मैं इस घर को अपना घर व आपको अपने माता–पिता व इस बिटिया को मैं अपनी बहिन मानकर ही जीवनभर आपका उपकार मानते हुए आपकी सेवा करूँगा। हरिया के इन विचारों को श्रवण करके सेठ–सेठानी ने पूर्ण आश्वस्त होकर अपने गले लगाते हुए कहाँबेटा, हम भी तेरे को अपने घर का सदस्य मानकर ही रखेंगे और तू भी जैसा बोल रहा है वैसे ही हमारी सेवा करना। ऐसा कहकर उसको उसके योग्य वस्त्र, सोने, बैठने का स्थान व आवश्यक सामग्री देकर अपने घर में रख लिया। और वह भी अपनत्व भाव से उस घर को अपना घर मानकर सेठ–सेठानी की सेवा में तत्पर हो जाता है।

(3)

हरिया सेठ–सेठानी का स्नेह पाकर आनंदविभोर होता हुआ खुशी का अनुभव करता है। सबसे पहले प्रातः उठकर सेठ–सेठानी को नमस्कार करता है, फिर झाड़ू लेकर हवेली की सफाई करता जिससे सारी हवेली चमकने लग गई। उसके बाद भैंस, बछड़े, घोड़े, ऊँट की देखभाल करके उनके गोबर को साफ करता। उनको घास, दाना–पानी डालकर उनकी पूरी सार–संभाल करके,

दुधारू गाय–भैंस का दूध दुह कर सेठानी के पास लाकर देता अैर बड़े विनम्र भाव से कहतौंमाँ ! अब क्या कार्य करूँ ?

सेठानी उसकी सेवाभावना देखकर बड़ी प्रसन्नता की अनुभूति करके अनंत स्नेह प्रकट करती हुई कहतौंबिटा ! अब थोड़ा कलेवा कर ले। यह कहकर उसको जो घर में होता दे देती। माँ के हाथ से जो भी भोजन मिलता, उसको खाकर आनंद की अनुभूति करता और कहतौंमाँ ! अब क्या सेवा करूँ ? वह कहतौंअब थोड़ी देर दुकान पर जाकर उसकी सफाई करके सेठजी को कहना की माँ घर में नाश्ते के लिये बुला रही है। तब हरिया दौड़कर दुकान में जाकर कहतौंपिताजी, आपको माँ नाश्ते के लिये बुला रही है। आप पधारिये और मेरे लायक यहाँ जो भी काम हो फरमाइये।

सेठजी भी उसके मधुर वचन और विनम्र व्यवहार देखकर प्रसन्नता का अनुभव करते हुए कहतैंदुकान की साफ–सफाई करके फिर गद्दी तकिये को वापिस लगाकर यहाँ बैठ जाना और दुकान की पूरी निगरानी रखना। कोई आ जाये तो बोलना कि सेठजी हवेली में नाश्ता करने पधारे हैं। आप यहाँ बिराजिये, अभी पधारने वाले ही हैं। हरिया सेठजी की बात सुनकर, हाथ जोड़कर 'जो आज्ञा' कहकर सेठजी के जाने के बाद उनके निर्देशानुसार सारा कार्य कर जो वस्तु जहाँ पड़ी रहती वहीं व्यवस्थित रख कर बैठे–बैठे पूरी सावधानी रखकर दुकान की

निगरानी रखने लगता।

इधर बाहर के आगन्तुक जो भी आते, हरिया बड़े मधुर वचनों से उनका स्वागत करते हुए बिठाता और सेठजी के बारे में बताता। उसके इस मधुर व्यवहार से आगन्तुक बहुत आश्चर्यानुभूति करते हुए उसका परिचय जानने की कोशिश करते तो बड़े विनम्र शब्दों में एक ही उत्तर देता कि मेरे तो माता–पिता, परिवार सब सेठजी हैं। यह सुनकर सब बड़ी प्रसन्नता का अनुभव करते।

इधर सेठ हजारीमल घर जाकर देखते हैं तो आज सेठानी बड़ी प्रसन्न दिख रही है। पूछने पर बोलींअब तो मानो हमारा भाग्य ही खिल उठा कि हरिया क्या मिला, मुझे तो प्यारा अपना बेटा ही मिल गया। पता नहीं, कुक्षि से कब बेटा प्राप्त होगा ? न मालूम कैसा होगा ? कितनी सेवा करेगा ? मगर हरिया को देखो, जब से आया है कितनी सेवा करता है। कैसा विनीत और कैसी मीठी बोली है इसकी। मुझे किसी काम को करते देखते ही तो दौड़कर मेरे हाथ से काम छुड़ाकर खुद करने लग जाता है। यहाँ तक कि आपके तथा मेरे कपड़े भी नहीं धोने देता। साथ ही अपनी बिटिया को भी अपना भाई मिल गया। रात–दिन उसे अपनी गोदी में ही उठाये फिरता है। कभी उसको रोते नहीं देख सकता। और वह भी इसके हाथों में रहकर इतनी खुश रहती है जितनी आपके और हमारे पास भी नहीं।

सेठ हजारीमल भी सुनकर कहते हैंसुमन की मम्मी ! देखो वास्तव में बात तो तुम कहती हो वैसी ही है। जब से वह हमारे घर में आया है तब से मुझे बड़ी शान्ति का अनुभव हो रहा है। दुकान की साफ–सफाई से लेकर हर कार्य बड़ी तन्मयता से करता है। मैंने हर तरह से उसकी परीक्षा लेकर देखा तो ईमानदार भी पूरा लग रहा है। न कभी फिजूलखर्ची करता है। हरएक कार्य की किफायत में तो मेरे से भी ज्यादा सजग रहता है। बोली में तो इतनी माधुर्यता है कि आने वाला हर व्यक्ति उसको देखकर बड़ा प्रमुदित होता है। जब से यह आया है तब से ग्राहकों की भी अभिवृद्धि हुई है। कुल मिलाकर मुझे ऐसा लगता है कि किसी–न–किसी भव में हमारा इसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। इसको देखते ही सहज मेरे मन में उमड़ते अपनत्वयुक्त अन्तरंग वात्सल्य को देखकर लगता है मानों अपना ही पुत्र हो।

फिर भी सुमन की मम्मी आज के जमाने के अनुसार सावधानी रखना तो अति आवश्यक है। हम देखते हैं अनेक परिवारों को, जिनके अपने पूत भी पराये जैसे बन कर सेवा की बात तो दूर रही, कितना अपमान व तिरस्कारयुक्त व्यवहार करते हैं। कई बार अपने पड़ोसियों से भी तूने और मैंने यह कहते हुए सुना है कि भाई, तुम तो बिना पुत्र के भी सुखद जीवन जी रहे हो और हमारे पाँच–पाँच पुत्र होते हुए भी हम पूरे दुःखी हैं।

जो धन इतना पाप करके कमाया, उसका आज हम अपनी इच्छानुसार कुछ परमार्थ भी नहीं कर सकते हैं। जो हवेली इतना कष्ट उठाकर चुनाई उस पर अब हमारे कुछ भी अधिकार नहीं हैं। जब तक हिस्सा नहीं दिया तब तक तो फिर भी पास आकर पूछते, कुछ चिंता रखते लेकिन बंटवारा कर देने के बाद तो सब अपने–अपने में मस्त हो गये। किसी को आकर देखभाल करने तथा पूछने तक की भी फुरसत नहीं।

इसलिये सुमन की मम्मी, मेरा तो तुमको इतना ही संकेत है कि कितनी ही सेवा करे, लेकिन आखिर पराया है। कब किसके बहकावे में आ जाये इसलिये अंतरंग सावधानी रखते हुए ही इसको अपना पूरा स्नेह, वात्सल्य देना है। ताकि हमको यह छोड़कर कहीं जाये ही नहीं और इस घर को अपना घर मानकर ही रहे। साथ ही थोड़ा इसके अध्ययन–अध्यापन पर भी ध्यान देना आवश्यक है ताकि समय पर दुकान के कार्य में भी सहयोग दे सके। बस, और ज्यादा तुमको समझाने की आवश्यकता नहीं। तुम स्वयं चतुर हो। यह कहते हुए सेठजी नाश्ते से निवृत्त होकर दुकान पर पहुँच गये और हरिया को घर जाने का संकेत कर दिया।

(4)

हरिया सेठजी की आज्ञा को शिरोधार्य कर घर

पहुँचा और आंगन में खेलती बच्ची सुमन को गोदी में उठाकर प्यार–दुलार करते हुए बोलीं माँ ! सुमन को कुछ खिलाया या नहीं ? ला, मेरी प्यारी सुमन को मैं अपने हाथ से खिलाऊँगा। यह कह कर जल्दी से माँ से खाद्य पदार्थ उसके योग्य लेकर बड़े प्रेम से गोदी में उछालते हुए खिलाने लगा। सुमन भी उसके स्नेह से अभिभूत होकर खाने को तत्पर हो गई।

उसको खिला–पिला कर फिर बोलींमाँ, अब मैं क्या काम करूँ ? माँ कहने लगींबेटा, सवेरे उठते ही तू काम में लगा हुआ है, अब थोड़ी देर विश्राम कर ले। तब तक मैं रसोई का कार्य निपटा लेती हूँ। हरिया बोलींमाँ, नहीं मुझे रसोई में भी पास बिठाकर कुछ काम करा ताकि धीरे–धीरे मैं भी रसोई बनाना सीख जाऊँगा। तब मेरे रहते तुझे कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। यह कहकर बैठ गया रसोई में और बंटाने लगा रसोई के कार्य में माँ के साथ हाथ।

सेठानी पद्मा भी उसकी कार्य करने की जिज्ञासा, विवेक व कुशलता से बड़ी प्रसन्नता का अनुभव करने लगी। अब तो प्रतिदिन का नियत क्रम बन गया। हरिया के सहयोग से सेठानी पद्मा गृहकार्य में हल्कापन महसूस करने लगी। और गृहकार्य से निवृत्त होने के बाद जो–कुछ भी समय मिलता उसमें से कुछ समय हरिया को पढ़ाने में लगाती। साथ ही महामंत्र नवकार को भी

याद कराती और स्वयं सामायिक–स्वाध्याय में भी समय निकालती।

हरिया अक्षरीय ज्ञान के साथ धर्म संस्कार से भी संस्कारित होता हुआ अपने भाग्य को सराहते हुए सोचने लगौंकहाँ मैं दर–दर भटकता हुआ ठोकरें खाकर जैसे–तैसे जिन्दगी पूरी कर रहा था, पर मेरे भाग्य ने पलटा खाया और इनकी शरण में आया। अब तो मुझे जीवन जीने का सच्चा आनंद प्राप्त हो रहा है, इतना आनन्द जन्मदाता माता–पिता के पास भी प्राप्त होता या ना होता ! ये दोनों मुझे अपना पुत्र समझ कर ही कितना स्नेह दे रहे हैं और मेरी हर सुख–सुविधा का ध्यान रखते हैं। मेरे जीवन में शिक्षा एवं सद्संस्कारों का भी बीजारोपण कर रहे हैं।

बस, मुझे भी अब इस घर को अपना घर समझ कर एवं इनको अपने जन्मदाता माता–पिता से भी ज्यादा समझ कर इस घर के गौरव को बढ़ाना है और इनकी सेवा करके इनके उपकारों से उऋण होना है। साथ ही इनका नुकसान अपना नुकसान समझ कर हरदम इनकी रक्षा करनी है। बस, इसी बात का दृढ़ संकल्प मन में धारण करता है और अपने को तन–मन से पूर्ण समर्पित करके घर के एक सदस्य के रूप में ही अपने जीवन को जीने लगा।

सेठ हजारीमल, सेठानी पद्मा भी उसको अपने घर का सदस्य समझकर अंतरंग सावधानी के साथ पूर्ण

स्नेह प्रदान करते हुए उसको खाने–पीने व अच्छे संस्कारों से संस्कारित करने का प्रयत्न करने लगे। हरिया भी सेठ–सेठानी व बहिन सुमन का हर पल खयाल रखते हुए सेवा में दत्त–चित्त रहने लगा। घर व दुकान के कार्य में सहयोग प्रदान करते हुए अक्षरीय ज्ञान के विकास के साथ ही सद्संस्कारों से अपने जीवन को संस्कारित करने लग गया।

श्रेष्ठी हजारीमल हरिया जैसे सरल, सौम्य व अवैतनिक व्यक्ति को पाकर "हींग लगे न फिटकरी, रंग चोखा का चोखा" वाली राजस्थानी कहावत को चरितार्थ करते हुए मन में बड़ी प्रसन्नता का अनुभव करने लगा। दिन–भर धन से भरे भंडारों को खोलकर उसके भीतर रखे धन के आंकड़े लगा कर मन ही मन आनंदित होते और प्रतिपल यह भंडार अधिक से अधिक और कैसे भरे, इसमें अपनी शक्ति लगाते हुए योजना बनाते और सोचते रहते कि किससे कितना लेना बाकी है, वह कैसे निकलवाया जाय। यदि सहज में न निकले तो साम–दाम–दंड और भेद आदि नितियों में निपूर्ण था और अपना पैसा निकलवाने में होशियार था। जब भी सेठ खाली बैठते, अपने व अपने बाप–दादे के जमाने के बही–खाते लेकर बैठ जाते और उनको दिन–भर टटोलते रहते।

(5)

एक दिन सेठ हजारीमल अपने पुराने बही–खाते को बड़ी गहराई से टटोल रहे थे। यकायक बही का एक पन्ना हाथ आ गया जिसमें चंदेरी नगरी के श्रेष्ठिवर्य रामदयालजी के नाम से बहुत बड़ी रकम लम्बे समय से बकाया निकल रही थी। जिसके लिये अनेक बार पत्र व्यवहार करने पर भी मूल तो दूर, ब्याज भी जमा नहीं हुआ। न पुनः कोई जवाब आया जिससे सेठ के मन को बहुत बड़ा धक्का लगा। वे सोचने लगेंअब क्या करें ? इतनी बड़ी रकम डूब जायेगी तो पेढ़ी को भारी घाटा लग जायेगा। उनके देखा–देख अन्य व्यापारी भी वैसा करने लग जायेंगे तो पेढ़ी की इज्जत धूल में मिल जायेगी। इसलिये श्रेष्ठ यही है कि किसी भी तरह से यह रकम निकलवाना आवश्यक है। ऐसा चिंतन करके सोचने लगे अपने मन में गहराई से इसका उपाय।

लेकिन खूब दिमाग दौड़ाने पर भी कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। आखिर इसी निर्णय पर पहुँचे कि चंदेरी जाकर रामदयालजी से प्रत्यक्ष मिलकर ही हिसाब–किताब करके निर्णय किया जाय। इस निर्णय पर पहुँचते ही शीघ्र दुकान को बंद करके घर में प्रवेश किया। आज अकस्मात् असमय में सेठजी को घर में प्रवेश करते देख कर सेठानी पद्मा आश्चर्यान्वित होती हुई हक्की–बक्की–सी उठी और सामने जाकर स्वागत के लहजे में बोलींपधारिये। आज इस समय आपका

दुकान से घर पर कैसे पदार्पण हुआ ? क्या कोई शारीरिक अथवा मानसिक व्यथा उत्पन्न हुई है अथवा कोई अन्य कार्य ? आपका चेहरा तनावग्रस्त महसूस हो रहा है। फरमाइये मेरे लायक सेवाकार्य, विराजिये तख्ते पर।

सेठजी सेठानी पद्मा के इस मधुर व्यवहार से थोड़ी देर अनन्त शान्ति का अनुभव करते हुए बोलेंप्रिये ! ऐसी कोई चिंता जैसी तो बात नहीं है। शारीरिक–मानसिक दोनों स्थितियों से मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ। सिर्फ आज चंदेरी जाने का विचार बन गया है, आवश्यक कार्य हेतु। जिसमें जाने व आने में सप्ताह–भर लग सकता है।

यह सुनते ही पद्मा निश्वास छोड़ते हुए एकदम उदासीन बनकर कहने लगींप्राणनाथ ! यह आपने कैसा दुःखद समाचार दिया। क्या आप नहीं जानते कि मैं आपके बिना सात दिन तो दूर, सात घंटे भी नहीं रह सकती। आपके बिना तो मेरा मन ही नहीं लगता। आप दुकान से भी थोड़ी देर बाद आते हैं तो भी आपके इंतजार में बेताब बनकर द्वार पर ही टक–टकी लगाकर देखती रहती हूँ। न खाना अच्छा लगता है, न पीना। इसलिये मेरा नम्र निवेदन है कि आप यहाँ से बाहर जाने का नाम ही मत लीजिए। नहीं तो मेरा जीना भी मुश्किल हो जायेगा। साथ ही मेरा खाना–पीना भी छूट जायेगा। ऐसा कहते–कहते वह जोर–जोर से आहें भरने लगी।

सेठानी पद्मा की यह दशा देखकर सेठ हजारीमल

का मन भी भर आया। फिर भी हिम्मत करके बड़े मधुर शब्दों में बोलीं"प्रिये ! तुम समझदार होकर भी ऐसे क्या कर रही हो। जैसे नई बहू बनकर आई हो। इस घर में आये और रहते कितना समय हो गया है और माता–पिता के गुजरने के बाद तो तुम इस घर की मालकिन ही बन कर रह रही हो। कितनी बार तो तुम इस विशाल हवेली में अकेली भी रहती थी। या नहीं रहती थी ? तुम्हारे रौब और व्यवहार से आस–पड़ोसी भी बिना खास कारण के आने में घबराते हैं। एक दिन तो घर में आये हुए चोरों को भी ऐसी ललकार लगाकर भगा दिया जिसके बाद कभी किसी ने पुनः इस घर में आने की भी हिम्मत नहीं की। अब तो तुम्हारे साथ तुम्हारी प्यारी बेटी सुमन भी है। पहली बात तो यह घर भी सबके बीचोबीच है, जहाँ डर जैसी कोई बात ही नहीं है। एक आवाज में ही सारे पड़ोसी जग जाते हैं। फिर भी यदि कुछ डर का प्रसंग भी आ जाये तो हिम्मत तो रखना आवश्यक है। बिना हिम्मत रखे कैसे काम चलेगा ? समय आने पर कहीं जाना भी पड़ता है। गये–आये वगैर काम भी नहीं चलता, समाज में बैठे हैं। साथ ही इतना लम्बा–चौड़ा व्यापार फैला हुआ है।

सेठ हजारीमल की बात सुनकर सेठानी कहने लगीं"पतिदेव ! आपकी बात भी यथार्थ है। इतना तो मैं भी जानती हूँ कि समाज में बैठे हैं। कभी सगे–सम्बन्धी, कभी व्यापार के निमित्त बाहर जाना भी आवश्यक हो जाता है।

फिर भी न मालूम आपके प्रति मेरा अनुराग ही ऐसा जुड़ गया है कि मैं थोड़े समय के लिये भी आपकी जुदाई सहन नहीं कर पाती हूँ। बस, इसीलिये मेरा सिर्फ आपसे यही नम्र निवेदन है कि यदि बिना गये अन्य प्रकार से काम निपट जाता है तो साधारण छोटे–मोटे कार्य हेतु आप मुझे छोड़कर बाहर न पधारें।

सेठानी पद्मा की बात सुनकर सेठ हजारीमल कहने लगे प्रिये ! मेरे प्रति तेरे अनुराग को तो मैं भी जानता हूँ और अपना सौभाग्य भी समझता हूँ कि तेरे जैसी पति–अनुरागिनी धर्मपत्नी प्राप्त हुई है। यही सुखद दाम्पत्य जीवन का सार है। इसी के आधार पर तो घर स्वर्ग के आनंद की अनुभूति कराता है। जहाँ पति–पत्नी में एक–दूसरे के प्रति प्रेम की, अनुराग की बहार बहती हो। जहाँ पति–पत्नी में परस्पर प्रतिदिन कलह व दांत कटा–कट होती ही रहती हो फिर उस घर में चाहे कितना ही सुख–साधनों से प्रचुर वैभव भी क्यों न हो, वह घर नरक या श्मशान से कम नहीं है।

रही बात तुझे छोड़कर बाहर जाने की, उसमें भी छोटे–मोटे कार्य के लिये तो मैं स्वयं समय व धन खर्च करके जाना कहाँ पसन्द करता हूँ। लेकिन बड़ी समस्या ही जब सिर पर आती है और अन्य सब प्रयोग करने पर भी जब कार्य नहीं बनता है तब ही बाहर जाने का निर्णय लेता हूँ। इसलिये आज भी मेरे सामने ऐसी समस्या आकर उपस्थित हुई है जिसको सुलझाने के अनेक प्रयत्न

करने पर भी वह सुलझ नहीं पाने से मुझे आज वहाँ जाने का निर्णय लेना पड़ा।

सेठानी पद्मा सेठ हजारीमल की परेशानी का अनुभव करते हुए कहने लगीं"पतिदेव ! ऐसी कौनसी विकट समस्या आ पड़ी जिसके कारण आपको जाने का निणय लेना पड़ा ? यदि मेरे सामने रखने योग्य हो तो रखिये ताकि मैं भी उस पर चिंतन करके आपके यहाँ से बिना पधारे ही समस्या सुलझ जाए, ऐसा उपाय बता सकूं।

सेठानी पद्मा की बात सुनकर सेठ हजारीमल कहने लगे"प्रिये ! देख, चंदेरी के सेठ रामदयालजी में बीस हजार रुपये बाकी निकल रहे हैं। इसके लिये उनको हिसाब भी भेजा गया और पत्र भी दिये गये। लेकिन अभी तक उसने मूल तो दूर की बात, ब्याज भी जमा नहीं कराया सो तो ठीक, वापिस पत्रों का भी अभी तक कोई जवाब ही नहीं दिया। इसलिये विवश होकर आज मुझे जाने का निर्णय लेना पड़ा। यदि नहीं जाऊँ तो इतनी बड़ी रकम डूब जायेगी।

सेठ हजारीमल की बात सुनकर सेठानी पद्मा ठहाका मार कर कहने लगीं"वाह–वाह पतिदेव ! इतनी छोटी–सी रकम के लिये आप इतने चिंतित हो उठे ? क्या फर्क पड़ेगा अपने ? नहीं भी लोटाये तो क्या उसके लिये घर–बार छोड़कर आप वहाँ पधारें ? यदि खरी

कमाई होगी तो अपने–आप आ जायेगी और यदि हमारे में पूर्वभव की मांगत होगी तो भरपाई हो जायेगी। इसलिये मेरा तो निवेदन है कि इतनी छोटी–सी रकम के लिये इतने झंझट उठाना उचित नहीं है। आप आज ही जाने का विचार स्थगित कर दीजिए।

बार–बार सेठानी पद्मा के मुँह से इतनी–सी रकम की बात सुनकर सेठ हजारीमल का पारा गरम हो गया। वे बोलेंतुम घर में बैठी–बैठी मौज उड़ा रही हो। तुमको क्या मालूम कि पैसा कैसे कमाया जाता है ? एक–एक पैसा बैठ कर, पेट पर पट्टी बांध कर जोड़ते हैं तब जुड़ता है। लोगों को तो बीस रुपये भी कितने भारी पड़ते हैं और तुम बीस हजार व उसके ब्याज जैसी बड़ी रकम को इतनी–सी कहकर उपेक्षा कर रही हो ? यदि मैं भी ऐसी ही उपेक्षा करने लग जाऊँ तो ये नखरे–चखरे, नित नये वस्त्र, जेवर आदि के सपने ही लेने पड़ेंगे। इतनी–सी रकम कहने में तो कुछ जोर नहीं लगता।

भागवान, विचार कर जरा, सामने खड़ी यह तेरी बिटिया सुमन, मानो मेरी छाती पर शिला ही आ पड़ी है। कल बड़ी होगी तो योग्य घर–वर देखकर इसका विवाह भी करना होगा। तब तुम्हीं चिल्लाओगी कि मेरी बेटी के ऐसे कपड़े–जेवर बनाना है, इतना दहेज देना है, इतने ठाठ–बाट से विवाह करना है। जमाईजी के लिये, मेरे पीहर वालों के, सगे–संबंधियों के ऐसे जेवर बनाना है।

प्रीतिभोज में भी इतने आइटम बनाना है। और न मालूम कितनी फरियादें तुम करने लगोगी। उस समय उन फरियादों की कैसे पूर्ति हो पायेगी ? जरा सोच, कड़ी मेहनत से कमाया धन ऐसे खोने के लिये थोड़े ही है ? यदि इस प्रकार लापरवाही करने लग जाऊँ तो यह भंडार खाली होते क्या देर लगेगी और इस पेढ़ी की इज्जत कैसे रहेगी ? इसलिये चाहे कुछ भी हो, मैं किसी को मेरा पैसा खाने नहीं दूंगा। येन–केन–प्रकारेण पैसा निकलवा कर ही आऊँगा।

अब तुम जल्दी से हमारे रास्ते में खाने–पीने की सामग्री बना कर के रक्खो ताकि कल सवेरे ही चंदेरी के लिये रवाना हो सकूं। यह कह कर सेठ हजारीमल वहाँ से उठे और जोर से आवाज लगाने लगेंहरिया, ओ हरिया !

हरिया सेठ हजारीमल की आवाज सुनकर दौड़कर पास में आया और बोलाँफरमाइये, मेरे लिये क्या हुक्म है ? सेठजी बोलेंदेख, कल सवेरे चंदेरी चलना है। इसके लिये दो घोड़े वाली बग्घी तैयार करके सोने बैठने के आवश्यक साधन के साथ खाने–पीने की आवश्यक सामग्री तेरी माँ को पूछकर तैयार करके जमा लेना। तेरे लिये भी एक–दो अच्छी ड्रेस तेरी माँ के पास से ले लेना। हरिया सेठ हजारीमल की सारी बात सुनकर, जो हुक्म कहकर जुट गया तैयारी करने और सेठजी स्वयं अपनी

गौरवता के अनुरूप सारे साधनैंनगदी, रुपये आदि एक मजबूत संदूक में भरकर तैयार हो गये।

इधर सेठानी ने भी आखिर विवश होकर रास्ते के योग्य खाने की सामग्रीसूखड़ी मिठाई, आचार, चटनी, खाखरा, मूंगडी आदि तैयार करके डिब्बे में भरकर सारी चीजें हरिया को समझाकर संभला दी। हरिया के लिये भी कपड़े व ओढने–बिछाने की सामग्री तैयार कर संभला दी। हरिया ने सारी सामग्री लेकर बग्घी में व्यवस्थित जमा दी और सारी बात सेठजी को बताकर सो गया।

(6)

प्रातः सेठजी उठे और अपने नित्य–नियम से निवृत्त होकर तैयारी करके आवाज लगाईंहरिया, ओ हरिया ! हरिया आवाज श्रवण करके पास आया तब सेठजी ने पूछौंक्या तैयार हो गया ? हरिया बोलौंजी, सब तैयारी है। कह कर बग्घी में घोड़े जोत कर हवेली के सामने खड़ी कर दी। फिर सेठजी हवेली में गये, सेठानी से मिलकर बोलैंदेखो सुमन की माँ, मैं रवाना हो रहा हूँ। वापिस जल्दी ही आ जाऊँगा। तुम किसी बात की चिंता मत करना। फिर बेटी सुमन को गोद में लेकर, सहला कर, प्यार भरा चुम्बन लेकर बोलैंदेखना, मेरी बिटिया को प्रेम से रखना। मैं इसके लिये अच्छी–अच्छी चीजें लेकर आऊँगा। इसको रुलाना मत। यह कहकर शुभ मुहूर्त में

बग्घी पर सवार हो गये।

सेठानी पद्मा ने भारी मन से मंगल विदाई देते हुए कुंकुम का तिलक लगाकर और आरती उतार कर शुभ–सुगन मनाते हुए विदाई दी। हरिया ने भी माँ को नमस्कार किया और सुमन को दुलार करके बग्घी को रवाना किया। सेठानी सुमन को गोदी में लेकर जब तक बग्घी आँखों से ओझल नहीं हुई, तब तक देखती रही और पतिदेव के प्रति शुभ कामना करती रही। उनके ओझल होते ही भारी मन से पुनः हवेली में आ गई। सेठजी व हरिया दोनों के चले जाने से हवेली सूनी–सूनी–सी महसूस होने लगी। फिर भी धीरे–धीरे बिटिया सुमन को खिलाते–पिलाते, मन को बहलाते हुए सेठजी के पुनः शीघ्र आगमन के इंतजार में दिन व्यतीत करने लगी।

इधर सेठ हजारीमल बग्घी में गादी–तकियों के सहारे बैठे मुँह में तंबोल चबाते हुए, रास्ते के प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करते हुए आनंद का अनुभव कर रहे थे। हरिया बड़ी होशियारी से घोड़ों की लगाम पकड़े बग्घी को चला रहा था। चंदेरी के मार्ग पर दस–बीस किलोमीटर की दूरी पार करने पर श्रेष्ठी हजारीमल की दृष्टि राह पर पैदल चलते हुए एक पंडितजी पर पड़ी जिनके दिव्य ललाट पर तिलक लगा हुआ था। गले में जनेऊ थी और हाथ में पंचांग था, जिससे स्पष्ट प्रतीत हो रहा था कि कहीं आस–पास के गाँव में मंगल कार्य सम्पन्न कराने हेतु पधार रहे हैं।

सेठजी ने हरिया को बग्घी रोकने का संकेत किया। हरिया ने भी सेठजी का संकेत पाकर बग्घी रोक दी। अचानक अपने पास में बग्घी रुकने से पंडितजी हड़बड़ा–से गये। लेकिन ज्योंही सेठजी ने कहौंपाये लागिन। पंडितजी सुनते ही हर्षविभोर होकर शुभं भवेत् रूप आशीर्वचन का उच्चारण करते हुए बोलेंआप कौन और कहाँ से पधारे और आगे कहाँ पधारना हो रहा है ?

तब सेठजी बोलेंमेरा नाम हजारीमल है और अहिछत्रा नगरी का रहने वाला हूँ। किसी व्यापारिक उद्देश्य से चंदेरी नगरी को जा रहा हूँ। अहोभाग्य से सहज आज आपके दर्शन हो गये। पधारिये, आप भी इस बग्घी में विराज जाइये, आपका गाँव आयेगा तब वहाँ उतार देंगे। अपनी बग्घी में जगह है ही।

श्रेष्ठी हजारीमल की इस मधुर मनुहार से अभिभूत होकर पंडितजी बग्घी में विराज गये। सेठजी भी तांबूल आदि प्रदान कर उनका स्वागत करते हुए आनंदानुभूति करने लगे। उनसे बातचीत करते हुए अनुभव करने लगे कि पंडितजी गहरे अनुभवी हैं तथा ज्योतिष में भी गहरी पैठ है। सहज इस संयोग का लाभ उठाना चाहिए।

यह सोचकर सेठ हजारीमल बहुत ही विनम्र वचनों में बोलेंपंडितजी, लगता है आपने इस लम्बी आयु में गहरे अनुभव प्राप्त किये हैं। कृपा करके मुझे भी कुछ अनुभव की बातें बतावें ताकि जब भी चारों तरफ से

हताशा का अनुभव हो तो जीवन के उन क्षणों में सहायक बन सके।

(7)

पंडित श्रेष्ठी हजारीमल की बात को श्रवण करके अपनी गहरी अनुभवी आँखों से उनको निहारते हुए कहने लगेंसेठ साहब, अनुभव की क्या बात बताऊँ ? मेरी इतनी लम्बी जिन्दगी ही इन नये–नये अनुभवों की खोज में पूरी हुई है। जीवन में एक–एक अनुभव ऐसे किये हैं कि अंतर श्रद्धा से जिन्होंने भी अपनायें, उनके लिये वे अनुभव चमत्कार रूप में ही सिद्ध हुए हैं और जटिल से जटिल समस्याओं से उद्धार ही हुआ है। यदि आपके दिल में भी अंतर विश्वास हो तो आप भी अपने जीवन में अपूर्व लाभ उठा सकते हैं बशर्ते कि उसके लिये आपको दक्षिणा देनी होगी।

वह दक्षिणा भी कोई बड़ी नहीं। सबसे पहले अनुभव का एक रुपया, दूसरे के दो, तीसरे के चार और चौथे के आठ, ऐसे क्रम से आगे–आगे दुगुने होते जायेंगे। यदि आपकी जिज्ञासा हो तो रखिये एक रुपया और सुनिये पहला अनुभव। सेठजी ने जल्दी से एक रुपया निकाल कर पंडितजी के सामने रख दिया।

पंडितजी ने एक रुपया लेकर अपने स्वर का परीक्षण करके कहाँ सेठ सा. इस समय मेरा स्वर यह बता रहा है कि यदि आप अपने हृदय में पूर्ण विश्वास रख कर

इनको ग्रहण करेंगे तो चाहे वर्तमान में आपको एकदम साधरण ही लगें, लेकिन इनको बिना पश्चात्ताप के ध्यान में लेकर यथाप्रसंग प्रयोग में लेवेंगे तो निश्चित रूप से आपके लिये वरदान रूप चामत्कारिक सिद्ध होंगे।

सेठ हजारीमल पंडितजी की बात को बहुत गहराई के साथ श्रवण करते हुए बोलेंपंडितजी, आपके वचनों में पश्चात्ताप और अनास्था का तो सवाल ही नहीं है। आपने चलाकर तो अपनी महिमा बताई नहीं। यह तो मैंने आपकी अनुभवभरी आँखों की झलक से महसूस करके ही पूछा। इसलिये अब आप फरमाइये अपने अनुभव की पहली बात।

पंडितजी सेठ हजारीमल की जिज्ञासा के अनुसार बोलेंसेठजी, अभी आपकी यात्रा में दो घोड़े, एक नौकर और एक आपैंये चार प्राणी हैं जो उचित नहीं है। आपकी यात्रा में पाँच का योग शुभ है इसलिये आप अपनी यात्रा में एक प्राणी और जोड़ लीजिए चाहे वह शैला ही हो।

सेठजी ने पंडितजी के इस अनुभव को श्रवण करके यथार्थता की अनुभूति करते हुए दो रुपये और पंडितजी के चरणों में रखकर बोलेंकृपा करके एक अनुभव और बताइये। तब पंडितजी ने सेठजी का आग्रह देखकर कहाँसेठ साहब ! आप अपने इस नौकर को कभी हीन दृष्टि से मत देखना। यह सोचकर कि कब किसका भाग्य किस रूप में परिवर्तित हो जाय और उसके साथ में

आपके भाग्य का भी परिवर्तन हो जाय।

पंडितजी के इस अनुभव को श्रवण करके बहुत गहराई से चिंतन करते हुए चार रुपये निकाल कर पंडितजी से कहने लगेंपंडितराज, इस बात पर एक अनुभव ऐसा और बताइये कि जिसके द्वारा समय पर मेरा गौरव कायम रह सके। पंडितजी ने अपने दिल की गहराई में जाते हुए कहाँसेठजी किसी के मर्म को उद्‌घाटित करने की बनिस्पत उसको ढकने का प्रयत्न ही करना।

सेठजी को यह अनुभव सुनते ही बड़ा आत्मसंतोष हुआ और बोलेँ पंडितराज, ये लीजिए आठ रुपये और एक अनुभव और ऐसा बताइये कि जिसके प्रयोग से मैं जिन्दगी–भर याद रख सकूं। सेठजी की इस बात को सुनकर पंडितजी कहने लगेंसेठजी अब इतना समय भी तो नहीं है क्योंकि मेरा गाँव अब बिल्कुल नजदीक ही आ गया है। इसलिये आप अपनी बग्घी रुकवा दीजिए। मुझे अब यथास्थान जल्दी पहुँचना है। पर सेठजी बोलेँपंडितराज, मैं बग्घी तो अभी रुकवाता हूँ। पर मेहरबानी करके उतरते–उतरते ही एक अनुभव तो सुनाते जाइये।

सेठजी का अत्याग्रह देखकर पंडितजी बोलने लगेंसेठजी, एक बात का हरदम ध्यान रखना कि चाहे कैसा भी व्यक्ति हो, उसे चेताये बिना नहीं मारना। यह कहते हुए बग्घी के रुकते ही, आपकी यात्रा सफल हो

और इस रास्ते पधारो तो यह ग्राम भी याद रखना। मेरा नाम प्रभाकर ज्योतिषी है। किसी से पूछने पर आपको मेरा घर मालूम पड़ जायेगा। ऐसा कहकर बग्घी से उतर पड़े। सेठजी भी पंडितजी का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लेकर हरिया को बग्घी आगे बढ़ाने का संकेत कर देते हैं। संकेत को पाकर हरिया घोड़ों की लगाम खींच कर तीव्र वेग से बग्घी को आगे चलाने लगा। इधर पंडितजी बग्घी से उतर कर अपने घर की ओर आगे बढ़ गये।

(8)

हरिया बग्घी को तेजी से आगे बढ़ा रहा था। उसके इशारे को पाकर घोड़े भी सरपट गति से दौड़ने लगे मानो हवा के साथ खेल रहे हों। कुछ रास्ता पार करते ही सेठजी की दृष्टि राह के बीच में पड़े शैले पर पड़ गई। जिसको देखते ही सेठजी को पहले अनुभव की स्मृति हो उठी और हरिया को बोलेंहरिया थोड़ी बग्घी रोक और देख यह शैला जो रास्ते में पड़ा है उसको उठाकर मेरे पास बग्घी में रख दे। हरिया सेठजी की आज्ञा को शिरोधार्य करके बग्घी को रोक कर नीचे उतरा और शैले को उठाकर लाया और सेठजी को पकड़ा दिया। सेठजी ने उसको लेकर बग्घी के एक कोने में रख दिया। और अपने पास की खाद्य सामग्री खिलाने लगे। इधर हरिया बग्घी को आगे बढ़ा रहा था। लगभग आधा

रास्ता पार हो गया। सेठजी ने देखा कि अब घोड़े भी थक गये हैं और सूर्य भी अस्ताचल की ओर जाने की तैयारी पर है। थोड़ी दूर ही सड़क के किनारे ही एक सुन्दर विश्रामगृह है। उसके पास ही बनी वापी और सुन्दर बगीचा है। ठहरने की भी सुन्दर व्यवस्था है। देख कर हरिये को कहौंबस भाई हरिया, अब बग्घी को यहीं रोक दे। आज रात्रि का विश्राम यहीं करना श्रेयस्कर है।

सेठजी के निर्देश को पाकर हरिया ने भी बग्घी रोक दी। बग्घी के रुकते ही सेठजी बग्घी से नीचे उतर गये और विश्रामगृह का निरीक्षण करके बोलौंहरिया बग्घी को भीतर लाकर खड़ी कर दे और घोड़ों को खोलकर पास में कुछ दूरी पर बनी खेली में पानी पिलाकर दाना–घास डाल दे। हरिया ने सेठजी के निर्देशानुसार सारा कार्य करके बग्घी से सामान उतारा और एक कमरे में जमा दिया। सेठजी के लिये बाहर ठंडी हवा में बिस्तर लगाकर बिठा दिया। सेठजी बिस्तर पर थोड़ी देर ठंडी हवा में सुस्ताने के बाद बोलौंहरिया अब दिन थोड़ा रह गया है इसलिये ला भोजन का डिब्बा ताकि समय पर भोजन से निवृत्त हो जायें।

हरिया ने निर्देश पाते ही भोजन सामग्री सेठजी के पास लाकर रख दी। सेठजी ने अपने हाथ से डिब्बा खोला और अपनी रुचि अनुसार एक थाली में भोजन सामग्री खुद के लिये ली और फिर एक बर्तन में हरिया

को भी परोस दी। दोनों सेठानी पद्मा व बेटी सुमन की याद करते हुए भोजन से निवृत्त हुए। हरिया ने जल्दी से बर्तन पुनः साफ किये और सारा सामान व्यवस्थित कर दिया। शैले को भी पास में रख कर उसको रोटी आदि के टुकड़े डाल दिये जिनको वह निर्भय बन कर खाने लगा। बाद में अपनी दुम में मुँह दबाकर गेंद बनकर सेठजी के पास अपना सरंक्षक मान कर बैठ गया।

सेठजी भोजन–पानी से निवृत्त होकर महामंत्र का स्मरण करने लगे। हरिया ने भी महामंत्र का स्मरण किया। जब सेठजी सोने लगे तब उनकी पादचम्पी करके जब सेठजी को नींद आ गई तब पास में ही अपना बिस्तर लगा कर तथा घोड़ों को सहलाकर, उनकी देखभाल करके वहीं बग्घी में ही सो गया। शैला भी सेठजी के पास ही बैठा था। अचानक अर्द्धरात्रि में एक कालंधर सेठजी के बिस्तर के पास ज्योंही आने लगा शैले ने देख लिया और बड़ी तीव्र गति से सर्प पर लपका। अपनी कंटीली पूंछ के ऐसे झपाटे मारे कि सर्प का मुँह सारा छिद गया और लहू–लुहान होते हुए उसका प्राणान्त हो गया।

प्रातःकाल सेठजी की निद्रा खुली तो उनकी दृष्टि शैले पर पड़ी। देखा, उसका शरीर खून से भरा है। इधर थोड़ी दूर पर ही एक विशालकाय सर्प मरा पड़ा है जिसको देखते ही सेठजी को यह समझते देरी नहीं लगी कि यह सब शैले की ही करामात है। याद आई पंडितजी

के पहले अनुभव की बात। वास्तव में पंडितजी का अनुभव सत्य निकला। यदि आज उनके अनुभव के आधार पर शैले को साथ नहीं लेता तो इस कालंधर से मेरी रक्षा कौन करता ? अब तो सोचने लगे कि पंडितजी के अनुभव वास्तव में जीवन की सच्ची धरोहर हैं। ऐसा चिंतन करके हरिया को सारी बात बताई और फिर आगे बढ़ने की तैयारी करने लगे।

सारा सामान बांधकर हरिये ने पुनः बग्घी में जमाया और घोड़े बग्घी में जोड़ दिये। सेठ हजारीमल भी बग्घी में बैठ गये। शैले का भी खून बगैरह साफ करके बग्घी में रख दिया और बढ़ा दी बग्घी को चंदेरी के मार्ग पर। बग्घी आगे बढ़ते–बढ़ते चंदेरी के बाहर पहुँच गई और विशाल उपवन के पास ठहरा दी। सेठजी बग्घी से नीचे उतरे और एक वृक्ष की छाया में विश्राम करने लगे।

(9)

कुछ देर पश्चात् सेठजी ने हरिया को पास बुलाया और बोलेंबेटा, पहले ये रुपये लेकर जा बाजार में और गरम–गरम पूड़ी–साग, कुछ मिठाई–नमकीन जल्दी से लेकर आ जा ताकि पहले भोजन से निवृत्त होकर फिर शहर में जाकर सेठ रामदयालजी का पता लगायेंगे।

हरिया सेठ हजारीमल की बात सुनकर बोलाँजैसी आपकी आज्ञा ! कहकर पैसे लिये और निकल पड़ा शहर

की तरफ। चलते–चलते चंदेरी के मुख्य द्वार तक पहुँचा और मजबूत द्वार और कोट को बड़े आश्चर्य से देखने लगा। संयोग से उसके एक दिन पहले ही चंदेरी नगरी के राजा महिपाल का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया जो निःसंतान थे। इस कारण सारी नगरी में राजा के वियोग के दुःख से भी ज्यादा भारी दुखमय चिंता व्यवस्था की बन गई। हर व्यक्ति के दिमाग में एक ही चिंता घर कर गई कि अब उत्तराधिकारी किसको बनाया जाय ? उत्तराधिकारी की नियुक्ति के बिना राजा महिपाल का अंतिम संस्कार भी नहीं किया जा सकता। राज्य परम्परानुसार सब इसी चिंता में निमग्न थे कि उत्तराधिकारी किसको बनाया जाय। सब अपना–अपना दिमाग दौड़ा रहे थे। महारानी से विचार–विमर्श करने पर वे भी अपने–अपने पक्ष की खोज करने लगी। राज–परिवार के निकटस्थ व्यक्ति भी अपना–अपना अधिकार जमाने में संलग्न थे। पर समस्या का कोई यथार्थ समाधान निकालना तो दूर, समस्या और अधिक जटिल व उलझती जा रही थी। सबके चेहरे उदास बने हुए थे। सारे राज्य में कुहराम मचा हुआ था।

इतने में राजभवन के महामात्य बलवंतराय का पदार्पण हुआ। सब ने उठकर उनका अभिवादन किया और सभी का अभिवादन स्वीकार करते हुए शोकाकुल हृदय से राजा महिपाल का शव जहाँ पड़ा था वहाँ पहुँचे और नयनों से नीर बहाते हुए बैठे हुए सभासदों की ओर

मुँह करके वहाँ पर स्थित आसन पर विराज गये और अपनी गंभीर वाणी से फरमाने लगेँ प्यारे सभासदो ! राजा महिपाल का अचानक स्वर्गवास हमारे राज्य के लिये एक भारी वज्रपात है। ऐसे न्यायप्रिय, प्रजावत्सल, पराक्रमी राजा के वियोग से सारे राज्य में भारी दुःख की लहर व्याप्त हो रही है। उससे भी ज्यादा दुःख की बात तो यह है कि वे अपने पीछे कोई उत्तराधिकारी नहीं दे कर गये जिसके कारण आज हमारे सामने पहली समस्या तो यह आकर खड़ी हुई है कि राज्य–परम्परा के अनुसार उत्तराधिकारी की नियुक्ति के बिना अपने पूर्व राजा महिपाल का अंतिम संस्कार भी नहीं कर सकते हैं। इसलिये अन्य सब बातों को गौण करके सबसे पहले उत्तराधिकारी का चयन करना नितांत आवश्यक है।

राज्य आपका, हमारा सबका है और हम राज्य के सेवक हैं। इसलिये सब परस्पर बैठकर पक्षपातरहित होकर एकमात्र राजहित व राज्य–परम्परा के गौरव को ही सम्मुख रखकर यह निर्णय लें कि किसको उत्तराधिकारी नियुक्त करना हितकर है। महामात्य के उद्‌बोधन से राजसभा में शांति का वातावरण हो गया। सब एक टकटकी से महामात्य को निहारने लगे लेकिन कोई मुँह खोलने के लिए तत्पर नहीं बन रहा था।

आखिर पुनः महामात्य ने ही सबको संबोधित करते हुए फरमायोँप्यारे सभासदो ! यह समय चुप्पी

साधने का नहीं है। किसी–न–किसी निर्णय पर पहुँचने का है। इसलिये सब परस्पर विचार करके जल्दी एक निर्णय पर पहुँचिये, लेकिन कोई अपने विचार अभिव्यक्त करने हेतु तत्पर नहीं बना। आखिर सारे सभासदों की ओर से एक व्यक्ति ने खड़े होकर महामत्य से निवेदन किर्यौं महामात्यजी ! क्या बतावें, महाराज महिपाल के प्राण छूटने के साथ ही हमने अपना दिमाग इसी भारी समस्या के सुलझाने में लगा रखा है पर अभी तक किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाये हैं। अब तो हम सबकी दृष्टि आप पर टिकी हुई है। आपके राजभवन में प्रवेश होते ही हमारी आधी समस्या तो हल हो गई है। अब शेष समस्या को सुलझाने में आप ही आधार हैं। आप ही दीर्घकाल से इस गौरवशाली महामात्य पद को संभालते आये हैं। इतने दीर्घकाल में आपने ऐसी कई समस्याएँ हल की हैं। साथ ही सुदूर राज्य में भी ऐसी आने वाली समस्या को कैसे, कब, किस ढंग से सुलझाई गई, इसका भी आपको अनुभव है।

सभा की ओर से आपश्री के चरणों में यही निवेदन है कि आप अपने दीर्घ अनुभव से इस समस्या का, जो भी उचित समाधान हो, वह करके जल्दी से जल्दी आगे के कार्य को सम्पन्न करें। सभी उपस्थित सभासदों को भी संबोधित करते हुए पूछौंक्या आप सब मेरे इस विचार से सहमत हैं ? तब सभी सभासदों ने एकमत

होकर उच्च स्वर में स्वर मिला कर कहा, हम सब इसमें सहमत हैं। हमारे दीर्घ अनुभवी महात्मात्य जो भी उचित समझें, उसी विधि से इस समस्या का समाधान करें। हमें सब मंजूर है, मंजूर है।

(10)

सारे सभासदों के एकमत होकर आग्रह करने पर महामात्य बलवंतराय ने पुनः सभा को संबोधित करते हुए बड़ी धीर, वीर, गम्भीर मुद्रा में फरमार्यौप्रिय, राज्य के हितचिंतक सभासदो ! आपने इस विकट समस्या के समाधान का भार मेरे पर जिस आशा और विश्वास के साथ डाला है उसके लिये मैं आप सबका आभारी हूँ। मैं अपना कर्तव्य भी समझता हूँ कि इस समस्या का समाधान शीघ्र हो ताकि हम आगे के लिये अपने कर्तव्य का निर्धारण कर सकें। इसलिये सबसे पहले तो मैं यह निवेदन करता हूँ कि यह कोई नई अथवा एक राज्य की ही समस्या नहीं है। इतिहास साक्षी है कि हमारी राज्य–परम्परा में भी ऐसी स्थिति पूर्व में भी आ चुकी है। ऐसा मैंने अपने बड़े हजूर से कई बार सुना है। मैं भी यही सोचता हूँ कि जब भी ऐसी समस्या आई और आती है, निष्पक्ष निर्णय हेतु एक परम्परागत पद्धति यह है कि हमारे पट्टहस्ती को सजाकर उसकी सूंड में गंगाजलभरा स्वर्ण कलश पकड़ा दो और उसको राजमार्ग में घुमाओ।

वह पट्टहस्ती जिस व्यक्ति का इस जल से अभिषेक करे उसको ही भावी राज्यधिकारी मान लें। उसको राज्य–सिंहासन पर आरूढ़ करके उसी के द्वारा हमारे राजा महिपाल का अंतिम संस्कार करा दें। बोलिये, इसमें आप किसी का कोई और सुझाव हो तो रखने का कष्ट करें।

महामात्य बलवंतराय के गहन अनुभवयुक्त अभिप्राय को सुनते ही समस्त सभासद हर्ष–हर्ष की ध्वनि के साथ बोल उठैंहो गया सारी समस्या का समाधान। अब शीघ्रता से कीजिये इसका प्रयोग और पहुंचिये एक निर्णय पर। बस, फिर देर क्या थी ? अतिशीघ्र पट्टहस्ती को सजाकर उसकी सूंड में गंगाजल से भरा स्वर्ण–कलश रख दिया गया। मंगल वाद्यों के साथ आगे पट्टहस्ती को करके राज्य के सब प्रमुख सभासद चलने लगे और देखने लगे कि किस भाग्यशाली का भाग्य खुलता है ?

पट्टहस्ती राजभवन से निकल कर मुख्य राजपथ पर आगे बढ़ता जा रहा था। आगे–आगे कुछ लोग जनता को सावधान करने हेतु आवाज लगा रहे थे, रास्ता छोड़ दीजिए, रास्ता छोड़ दीजिए। यह आवाज सुनकर सब रास्ता छोड़ कर अलग हट जाते और देखने लगते पट्टहस्ती को। कोई कौतूहलवश अपना भाग्य आजमाने हेतु पट्टहस्ती के पास ही आ जाते। पर सबको आश्चर्य इस बात का हो रहा था कि पट्टहस्ती सारे राजमार्गों पर घूमते हुए चंदेरी नगरी के मुख्य द्वार तक भी पहुँच गया

पर किसी पर उसने कलशाभिषेक नहीं किया। सब के मन में एक ही चिंता व्याप्त हो रही थी कि क्या किया जाय ? कैसे निर्णय हो ? अब कब राजा का अंतिम संस्कार होगा ? आज तीसरा दिन है, सारे राज्य में शोक छाया हुआ है। न किसी को खाना–पीना अच्छा लगता है, न अन्य कोई बात। फिर भी मन मारकर पट्टहस्ती के पीछे–पीछे चल रहे थे। पट्टहस्ती मुख्य द्वार से बाहर निकलने लगा। सब उसके पीछे दरवाजे के बाहर निकलने लगे।

(11)

इतने में आवाज गूंजीं‌सब हट जाइये, रास्ता छोड़ दीजिए। अचानक यह शब्द हरिये के कान में भी पड़े जिनको सुनकर एकबार तो हड़बड़ा गया। फिर हिम्मत करके द्वार के कपाट से चिपक कर वहीं खड़ा हो गया। ज्योंही पट्टहस्ती उसके पास से निकलने लगा, अचानक हरिया पर दृष्टि पड़ते ही तो उसने जोर से चिघांड भरी और फिर अपनी सूंड में रखा गंगाजल से भरा स्वर्ण–कलश उस पर उंडेल दिया। हरिये को अपनी सूंड से उठाकर पीठ पर रखे सिंहासन पर बिठा दिया। सारे राज–सभासदों ने चंदेरी नगरी के महाराजाधिराज की जय हो, विजय हो के साथ मंगल जयनाद के साथ मंगल वाद्ययंत्रों की ध्वनि से नभ को गुंजायमान करते हुए पट्टहस्ति को पुनः

राजमार्ग से होते हुए राजभवन में प्रवेश कराया। पट्टहस्ती की पीठ पर लगे सिंहासन पर एक साधारण वस्त्रों को धारण किये हुए युवक को बैठा हुआ देखा तो सब आश्चर्यानुभूति के साथ कहने लगेभैया, यह है, भाग्य का चमत्कार। भाग्य कब, किस व्यक्ति को कहाँ से कहाँ, क्या से क्या बना देता है ? जब व्यक्ति का पुण्योदय होता है तो रंक को राजा बनते भी देरी नहीं लगती और जब पापोदय होता है तो राजा को रंक बनते भी देरी नहीं लगती।

स्वयं हरिया भी कुछ समझ नहीं पा रहा था कि यह अचानक क्या हो रहा है। यथार्थता का भान तो उसे तब हुआ जब उसको राजभवन में ले जाकर बताया गया कि हमारे चंदेरी नगरी के महाराजाधिराज महिपालजी का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया, साथ ही उनके पीछे कोई उत्तराधिकारी नहीं होने से उसकी नियुक्ति के बिना राज–परम्परा के अनुसार उनका अंतिम संस्कार भी नहीं हो सकता। सबके सामने बड़ी भारी समस्या खड़ी हो गई थी, उसका समाधान ढूंढते–ढूंढते दो दिन पूरे हो गये परन्तु कोई समाधान नहीं होने पर आखिर हमारे महामात्य बलवंतरायजी जो आज दीर्घकाल से इस महामात्य के गरिमामय पद को संभाल रहे हैं, अपनी अनुभूतियों के आधार पर राज्य को ऊँचाइयों पर ले जा रहे हैं, आखिर सब ने एकमत होकर उन्हीं पर इस समस्या के समाधान

का भार डाला।

सब के अत्याग्रह से महामात्य बलवंतराय ने निष्पक्ष समाधान हेतु राज्य की पूर्वपरम्परा के अनुसार यह निर्णय लिया कि पट्टहस्ती को सजाकर उसकी सूंड में गंगाजलभरा स्वर्ण–कलश रख कर नगरी में घुमाया जाय। जिस पुण्यशाली पर पट्टहस्ती यह उंडेल कर अभिषेक करे, उसे अपनी सूंड से उठाकर अपनी पीठ पर रखे, सिंहासन पर बिठा दे उसी को राज्याधिकारी मान लिया जाय। बस, इसी निर्णय के साथ पट्टहस्ती को सजाकर गंगाजल से भरा स्वर्ण–कलश पकड़ाकर घुमाते हुए द्वार तक पहुँच गये। सबको भारी निराशा हो रही थी, पर आप पर दृष्टि पड़ते ही इसने आपका अभिषेक करके अपनी पीठ पर रखे सिंहासन पर अपनी सूंड से पकड़ कर बिठाते ही निराशा में आशा का संचार कर दिया। इसलिये आप यथाशीघ्र हमारे आग्रह से इस राजसिंहासन पर आरूढ़ होकर हमें स्वीकृति प्रदान करें ताकि आपका विधिपूर्वक राज्याभिषेक करके हमारे पूर्व महाराजा महिपालजी का अंतिम संस्कार कर सकें।

(12)

अकस्मात् घटित इस घटना से पहले तो वह एकदम घबरा गया। फिर सारी बात के रहस्य को समझकर संभल कर बोलौंप्यारे सभासदो ! भाग्य की बड़ी

विचित्र लीला है, भाग्य कब व्यक्ति को रंक से राजा बना देता है और उसके रूठने पर राजा को रंक बनते भी देरी नहीं लगती। आज मैं इस सत्य तथ्य की अनुभूति अपने जीवन में साक्षात् कर रहा हूँ।

मैंने भी अपने भाग्य से जीवन में अच्छे सम्पन्न परिवार में जन्म लिया लेकिन भाग्य के रूठते ही माता–पिता का छः वर्ष की वय में वियोग हो गया। परिवार वालों ने मेरे पिता की सम्पत्ति, धन, जमीन, जायदाद पर कब्जा करके घर से निकाल दिया जिससे विवश हो भीख मांगकर जीवन निर्वाह करने लगा। पुनः कुछ भाग्य ने करवट बदली तो सेठ हजारीमल अहिछत्रा नगरी वाले ने मुझे अपने पुत्रवत आश्रय दिया। उन्हीं की सेवा में रहते मैं आज आप की चंदेरी नगरी में पहुँचा और भाग्योदय ने आज मुझे सेवक से शासक रूप में यहाँ पहुँचा दिया। इसलिये मेरे तो जीवनदाता सेठ हजारीमलजी हैं जो यहाँ व्यापारार्थ पधारे हुए हैं। मैं तो उनकी आज्ञा से ही भोजन सामग्री लाने हेतु शहर में आ रहा था। बीच में ही यह घटित हो गया।

मैं अपने कर्तव्य के नाते उनकी आज्ञा में बंधा हुआ हूँ। इसलिये उनकी स्वीकृति लेकर ही मैं आपके आग्रह को स्वीकार कर सकता हूँ। यह सुनते ही शीघ्रता से कुछ राज–कर्मचारी उनके निर्देशानुसार नगरी के बाहर पहुँचे, जहाँ सेठ हजारीमलजी बैठे–बैठे हरिये का

इंतजार कर रहे थे। इतने में वे राज–कर्मचारी बोले, क्या आप अहिछत्रा नगरी के सेठ हजारीमलजी हैं और आपके साथ कोई हरिया नाम का सेवक भी है ?

राज–कर्मचारी की बात को सुनकर सेठ हजारीमल पहले तो घबरा गये और सोचने लगे क्या बात है ? हरिये ने कुछ गड़बड़ घोटाला कर दिया है ? अहो, इस पराये क्षेत्र में मेरा क्या होगा ? ये राज–कर्मचारी मुझे लेने क्यों आये हैं ? फिर सोचा, अब जो–कुछ होना होगा वह होकर ही रहेगा। घबराने से तो और काम बिगड़ने ही वाला है। अब तो धैर्यता से ही काम लेना होगा। यह सोचकर, हृदय में धैर्य धारण करके बोलेंभाई साहब, आप कौन हैं ? बोलेंहम राज–कर्मचारी हैं। सेठ हजारीमल बोलेंहाँ मैं ही हजारीमल हूँ और हरिया मेरा ही नौकर है जो शहर में भोजन लाने गया है, जो अभी तक नहीं आया है। मैं उसी कक इंतजार में बैठा हूँ। क्या वह आपको कहीं मिला क्या ? तब वे बोलेंहाँ, राजभवन में मिला था और हम राज–कर्मचारी उनकी आज्ञा से ही आपको लेने आये हैं। उसने आपको वहीं बुलाया है, अब वो यहाँ नहीं आ सकते।

आप हमारे साथ चलिये ताकि आपका सेवक वहीं आपको मिल जायेगा और भोजन भी वहीं हो जायेगा। हजारीमल, राज–कर्मचारियों के मुँह से उनकी आज्ञा से ही हम आपको लेने आये हैं, सुनकर मन में आश्चर्य करने लगा कि यह सब क्या है। आखिर सोचा,

अब इनके साथ चलने में ही सार है। यह चिंतन करके उठा अपने स्थान से और बोलेंयहाँ मेरी बग्घी और सब सामान पड़ा है। इनकी देख–रेख कौन करेगा ?

राज–कर्मचारी बोलेंसेठ साहब, आप इनकी चिंता न करें। हम में से एक इस बग्घी को और सारे सामान को व्यवस्थित करके ले चलते हैं आपके साथ ही। उसी समय राज–कर्मचारियों ने सारा सामान बग्घी में जमा किया और सेठजी को रथ में बिठाकर चल पड़े राजभवन की तरफ और पीछे–पीछे बग्घी भी कर्मचारी लेकर आ रहा था। बीच–बीच में सेठ हजारीमल विचारों की उथल–पुथल में बग्घी को देखते हुए रथ में बैठे सोचते जा रहे थे। यह सब क्या हो रहा है ? इतने में देखा, रथ राजभवन के मुख्य द्वार से प्रवेश कर के राजभवन के पास रुका। पीछे बग्घी भी आकर रुक गई। राज–कर्मचारियों ने ज्योंही अन्दर जाकर सूचना दी, सेठ हजारीमलजी पधार गये हैं त्योंही हरिया सिंहासन से उठा और राजभवन से बाहर आकर सेठ हजारीमल के चरणों में गिरा। सेठ हजारीमल तो हक्का–बक्का रह गया कि यह यहाँ का राजा और मेरे पाँव पड़ रहा है और ये राज–कर्मचारी मेरे स्वागत हेतु तत्पर हैं। कुछ समझ नहीं आ रहा है ? क्या रहस्य है ?

इतने में वे राज–कर्मचारी, जो सेठ हजारीमल को लेने आये थे, उनको देखते ही तो बोल पड़ेंभाई, तुम

मुझे यहाँ कहाँ ले आये हो ? कहाँ है मेरा हरिया ? आप तो कह रहे थे कि हम आपको उन्हीं के पास ले के जा रहे हैं और आप मुझे यहाँ राजभवन में क्यों ले आये ? मुझ साधारण व्यक्ति का यहाँ क्या काम है ? इतने में हरिये ने आकर सेठजी का हाथ पकड़ा और बोलौंपिताश्री क्या आपने मुझे पहचाना नहीं ? मैं ही तो हूँ आपका सेवक हरिया। जरा गौर से देखें और अन्दर पधारें, फिर सारी बात आपके समझ में आ जायेगी। ऐसा कहकर सेठ हजारीमल को भीतर लेकर गये। राजा हरिसिंह ने अपने पास ही एक सिंहासन पर बिठाया और फिर उनके चरणों में नमस्कार करके अपने सिंहासन पर बैठते ही सारे सभासद जोर से बोल पड़ेंचंदेरी नगरी के राजा हरिसिंह की जय, सेठ हजारीमल की जय। सुनकर हजारीमल सेठ तो अवाक् रह गये और पूछने लगेंभाई हरिया, यह सब क्या हो रहा है ? मुझे कुछ समझ ही नहीं आ रहा है। जरा सारा रहस्य खोल कर समझा तो सही।

(13)

सेठ हजारीमल की इच्छा को जानकर महामात्य बलवंतराय खड़े हुए और सेठ हजारीमलजी को संबोधित करते हुए बोलेंसेठ साहब, आपका चंदेरी नगरी में आगमन हमारे लिये वरदान बन गया। आपके आगमन से हमारी चंदेरी अनाथ से सनाथ बन गई। तीन दिनों पहले हमारे

चंदेरी नगरी के राजा महिपाल का अचानक स्वर्गवास हो गया था। उनके पीछे कोई उत्तराधिकारी नहीं होने से उनका अंतिम संस्कार भी राज–परम्परानुसार नहीं कर सकते। इसलिये सब इसी उधेड़बुन में लगे थे कि किसको उत्तराधिकारी बनाया जाय। खूब युक्तियां लगाई लेकिन कुछ भी समाधान नहीं हो रहा था।

आखिर मुझे पूर्वपरम्परानुसार एक युक्ति याद आई कि निष्पक्ष निर्णय के लिये उपयुक्त यही रहेगा कि पट्टहस्ती को सजाकर गंगाजलभरे स्वर्ण कलश को सूंड में पकड़ा दिया जाय और फिर नगरी में घुमाया जाय। जब यह पट्टहस्ती घूमते–घूमते जिसका अभिषेक करके अपनी सूंड से पकड़कर अपनी पीठ पर सजे सिंहासन पर बिठा दे उसी को राज्याधिकारी मान लिया जाय। इसी उद्देश्य से पट्टहस्ती को सजाकर नगरी में घुमाने लगे। ज्योंही नगरी के बाहर निकले त्योंही इन पर दृष्टि पड़ते ही पट्टहस्ती ने इनका अभिषेक करके सूंड में उठाकर अपनी पीठ पर लगे सिंहासन पर बिठाया। सब ने इनको अपना नरेश मानकर महल में ले आये और अर्ज करने लगे कि अब राजतिलक की स्वीकृति दीजिए ताकि उस रस्म को अदा करके पूर्वनरेश महिपाल का अंतिम संस्कार करके निवृत्त होवें।

पर इन्होंने तो अपनी सारी घटना बताकर आपका नाम लेकर बोले कि मेरे मालिक वो ही हैं। उनकी

अनुमति के बिना कुछ भी स्वीकृति नहीं दे सकता। बस, यह सुनते ही हमने दो राज–कर्मचारियों को आपको लाने हेतु भेजा और हमारे अहोभाग्य से आप पधार गये। इसलिये अब आपसे यही नम्र निवेदन है कि आप शीघ्र अनुमति प्रदान करें ताकि हम इनका राजतिलक करके फिर पूर्वनरेश राजा महिपाल का अंतिम संस्कार कर सकें और नगरी शोकरहित होकर फिर राज्याभिषेक महोत्सव मना सके। हम अपना सौभाग्य मानते हैं कि हमको ऐसे विनीत पूज्यों के प्रति इतना पूज्य भाव रखने वाले शासक मिले हैं। आपकी कृपा है इसलिये आज हम आपका महान आभार मानते हैं और पुनः आग्रह करते हैं कि आप राजतिलक की शीघ्र स्वीकृति प्रदान कर हम सबको अनुगृहीत करें।

सेठ हजारीमलजी ने ज्योंही सारी बात सुनी तो उस पंडित की दूसरे अनुभव की बात जो दो रुपये देकर प्राप्त की थी, वह स्मृति पटल पर उभर आई। उन्होंने कहा था कि अपने सेवक को छोटा समझ कर कभी तिरस्कार मत करना। कब किसका भाग्य कैसे करवट बदले, यह बात अक्षरशः खरी हुई। सेठ हजारीमल ने गहराई से सारी बात का चिंतन करके यथाशीघ्र शुभ मंगल मुहूर्त में राजतिलक की स्वीकृति दी। सब ने हर्षध्वनि गुंजाते हुए राजतिलक किया और महाराजा हरिसिंह की जय से नभ गुंजाते हुए सेठ हजारीमलजी

को भी राज्य सरंक्षक पद से विभूषित किया तथा आभार प्रकट करके यथाशीघ्र पूर्वनरेश महिपाल की अन्त्येष्टि क्रिया कर दी गई। तीन दिन राज–शोक मनाने के बाद महामात्य बलवंतराय ने राजसभा बुलाई और राजा हरिसिंहजी के राजतिलक का तीन दिन तक भारी महोत्सव मनाने की घोषणा की गई। जगह–जगह पर नाटक मंडलियां भाग्य का चमत्कार रूप नाटक दिखाकर जनता में राजा हरिसिंह के प्रति अहोभाव पैदा करने लगी।

(14)

तीन दिवस व्यतीत होने के बाद पुनः राजसभा बुलाई गई और महामात्य बलवंतराय ने सभी प्रमुख राजपुरुषों, नगर श्रेष्ठियों का परिचय कराया। राजा हरिसिंह ने भी सबका परिचय पाकर संतुष्टि का अनुभव करते हुए सारा राज्य, उसकी सीमा और उसके अधीनस्थ अन्य राज्यों की जानकारी के साथ राजकोष, उसकी आय–व्यय का भी जायजा लिया। प्रजा के हितोपयोगी साधनों का भी सारा विवरण लेते हुए दानसम्पन्न श्रेष्ठिवर्यों की उदारता, गरीबों की सुख–सुविधा की भी जानकारी प्राप्त की। उसके बाद भोजन का समय होते ही महामात्य ने निवेदन कियाँराजन, अब आप भीतर मुख्य महल में पधारिये।

महामात्य के आग्रह से राजा हरिसिंहजी मुख्य महल में पधारे। पूर्वनरेश महाराजा महिपाल का जहाँ

अंतेउर था, उसमें अब केवल राजमाता एवं दास–दासियां ही रहते थे। सबसे पहले उन्होंने राजमाता के चरणों में शीष झुकाकर कहौंमातेश्वरी, आज मैं धन्य हो गया कि आज मुझे आप जैसी प्यारी माँ मिली हैं। छः वर्ष की लघुवय में ही मेरे सिर से माता–पिता का साया उठ गया। विशाल धन–वैभव लुट गया। एक भिखारी की तरह दर–दर ठोकर खाता हुआ जीवनयापन करने लगा।

पुनः भाग्य ने कुछ पलटा खाया तो इन सेठजी व सेठानी ने मुझे माता–पिता–सा दुलार व प्यार दिया और अब मुझे आप जैसी राजमाता मिली हैं। हे मातेश्वरी ! मैं आज आपके चरणों की शपथ खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं आपको अपनी जन्मदात्री माता से बढ़कर समझकर सेवा करूँगा। मेरा तन–मन सब–कुछ आपके चरणों में समर्पित है। मुझे आप अपना बेटा ही समझकर अपनावें। पिताश्री के वियोग से आपके मन में विषाद होना स्वाभाविक है। पर उस पर किसी का जोर चला, न चल सकता है। इसीलिए मेरा आपसे नम्र निवेदन है कि आप अपने मन का विषाद त्याग कर मुझे आशीर्वाद देवें और अपनावें ताकि मैं आपकी सेवा करके धन्य हो जाऊँ। यह कहकर एक बच्चे की तरह राजमाता की गोद में लुढ़क गये।

यह दृश्य देखकर सबका हृदय भर आया। स्वयं राजमाता भी इतनी भावविभोर हो गई कि मानो उसका अंगजात ही मिल गया हो। अंतर स्नेह में वि□ल होकर

हरिसिंह को बांहों में भरकर, उसके सिर पर हाथ फेरकर छाती के चिपका लिया। बड़े प्रेम के साथ दासियों को कहकर भोजन थाल मंगवाया और अपने हाथ से ही मुँह में ग्रास देकर भोजन कराने लगी। यह दृश्य देखकर तो महामात्य और राजपुरुष भी गद्‌गद हो गये।

राजा हरिसिंह भी राजमाता के हाथ का ग्रास खाकर अपने को धन्य मानने लगा और कहने लगाँमातेश्वरी ! मैं तो इन सेठजी का भी सेवक ही था और आपका भी सेवक ही हूँ और रहूँगा। यह राजवैभव सब आपका ही है। मैं तो सिर्फ राजसेवक के रूप में रहकर ही राज्य–व्यवस्था संभालूँगा। बस, मुझे तो केवल आप अपना आशीर्वाद देती रहें और हमारी राज्य–परम्परा का गौरव बढ़ता रहे इसकी शिक्षा देती रहें।

वहाँ उपस्थित दास–दासियों को भी पूर्ण स्नेह भाव वर्षाते हुए कहा कि आप भी अपने कर्तव्य का पालन करते हुए मातेश्वरी की सेवा में किसी प्रकार की कमी मत रखना। वैसे मैं भी समय–समय पर मातेश्वरी की सेवा में हाजिर होता रहूँगा। इतना कहकर पुनः राजमाता के चरणों में वंदन करके रवाना हुए।

राजमाता को भी हरिसिंह के विनम्र एवं मधुर व्यवहार से आत्म– सन्तोष हुआ। पतिदेव के वियोगमय व्रजाघात को भी भूलकर अपने जीवन को प्रभु–स्मरण, दान–पुण्य, परमार्थ एवं धार्मिक कार्यों में यापन करने लगी।

(15)

महामात्य महाराजा को फिर पास में बने हुए राजभवन में ले गये जो सम्पूर्ण आधुनिक सुख–सुविधाओं से परिपूर्ण था, उसको दिखाया कि यह आपके निवास के लिये हर तरह से उपयुक्त है और राज्यसभा से भी बिल्कुल लगा हुआ ही है। राजा हरिसिंहजी व सेठ हजारीमल ने पूरे महल को घूमकर देखा। महल के पीछे विशाल उपवन के साथ ही सुदूर तक दृष्टि डाली तो वहाँ का प्राकृतिक दृश्य भी बड़ा मनमोहक लगा। साथ ही उस महल की अपने–आप में सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वह राजसभा के साथ ही सब महलों से एवं उपवन से भी जुड़ा हुआ था। मुख्य कक्ष तो ऐसे ढंग से बना हुआ था कि सारे राजभवनों के साथ ही पूरे नगर पर भी दृष्टि डाली जा सकती थी। उसमें ऐसे–ऐसे गुप्त भंडार व द्वार भी बने हुए थे ताकि भयंकर से भयंकर शत्रु से भी जान–माल की पूर्ण रक्षा की जा सकती थी।

देखकर राजा हरिसिंह व सेठ हजारीमल को भी वह महल हर तरह से मन को भा गया। बस, फिर क्या था ? महाराजा हरिसिंह की स्वीकृति मिलते ही महामात्य ने उनके योग्य दास–दासी व सारे साधनों की व्यवस्था कर दी। फिर आगे बढ़कर दूसरे महलों में आये। वे भी आवश्यकतानुसार अन्य महारानियों, राज परिवार के निकटस्थ अतिथियों के लिये नियुक्त कर दिये गये। फिर

एक महल वैसे तो मुख्य महल से जुड़ा हुआ ही था, फिर भी थोड़ा अलग था, पर सर्वसुविधाओं से उपलब्ध था। उसको देखकर राजा हरिसिंहजी बोल पड़ेंयह महल सेठजी के लिये अर्थात् राज्य संरक्षक महोदय के लिये हर तरह से उपयुक्त रहेगा ताकि वे समय–समय पर सब महलों की गतिविधियों का ध्यान रखते हुए उनका संरक्षण कर सकें।

महाराज सेठ हजारीमलजी को संबोधित करके कहने लगे, पिताश्री फरमाइये मेरा विचार आपको उचित लगा या नहीं ? सेठजी कहने लगेंअब मैं क्या बताऊँ आप सब जानते ही हैं। अहिछत्रा नगरी में कितना लम्बा–चौड़ा व्यापार फैला हुआ है। साथ ही सेठानी, जीव प्यारी बिटिया सुमन को छोड़कर मैं यहाँ कैसे रह सकूँगा ? आप स्वयं विचार करें।

सेठ हजारीमल की बात को सुनकर राजा हरिसिंहजी बोलेंयह सारी चिंता आप अपने मन से निकाल दीजिए। आपकी स्वीकृति के साथ ही सारी व्यवस्था व्यवस्थित हो जायेगी। माताजी व प्यारी बहन सुमन को मैं खुद जाकर यहाँ लेकर आऊँगा या राजसेवकों को भेजकर बुला दूंगा। पर अब आपको यहाँ से जाने तो हरगिज नहीं दूंगा। यह आप अपने मन में निश्चय कर लीजिये।

राजा हरिसिंहजी की बात सुनकर महामात्यजी

के साथ ही सारे राज्यप्रमुख एक ही स्वर में कहने लगेंबिल्कुल यथार्थ है, बिल्कुल यथार्थ है। आप राजन् की हर प्रवृत्ति से बचपन से परिचित हैं और हमारे लिये तो ये एकदम अपरिचित हैं और हम भी इनसे बिल्कुल अपरिचित हैं। साथ ही अब तो आप हमारे राज्य के संरक्षक पद पर भी सुशोभित हैं। इसलिये सारे राज्य के संरक्षण की आप पर जवाबदारी है। साथ ही हमारे सारे राज्य पर भी आपका महान उपकार है। आपके शुभागमन से हमारी विकट समस्या का समाधान हुआ जिसके फलस्वरूप ऐसे युवा, गुणसम्पन्न शासक की प्राप्ति हुई। साथ ही राजन के जन्मदाता माता–पिता के वियोग के बाद ये आपके सान्निध्य में ही रहे और आपके सुसंस्कारों से ही सुसंस्कारित हुए हैं तो अब आपके माता–पिता, संरक्षक सब–कुछ आप ही हैं। इसलिये आपका भी भारी उत्तरदायित्व हो जाता है कि हर तरह से अपने पुत्र के समान ही संरक्षण करने हेतु अब आप यहीं विराजें। यह राज्य भी आपका ही समझें और यहीं विराजने का अनुग्रह करें।

इस प्रकार राजा हरिसिंहजी व अन्य राजप्रमुखों का अत्याग्रह लखकर बोलेंयह तो सब राजा हरिसिंहजी के भाग्य की बात है। इसमें मेरा क्या है ? मैं तो इनको एक नौकर के रूप में ही रखकर सेवा ले रहा था। लेकिन यह इनकी महानता है जो सारा श्रेय मुझ पर डालकर इतना सम्मान दे रहे हैं। इसलिये पूर्ण रूप से मैं अपने

घर–परिवार को लाकर यहीं बस जाऊँ, ऐसा मानस तो अभी नहीं बना पा रहा हूँ, फिर भी जब तक मेरा अन्तःमन साक्षी देगा तब तक यहाँ रहकर आपके राज्य की जितनी सेवा कर सकता हूँ उतनी करने की भावना रखता हूँ। यह सुनकर सब हर्षविभोर होकर पुनः राज्यसभा में पहुँच गये।

(16)

राजसभा में पहुँच कर राजा हरिसिंहजी राज सिंहासन पर आरूढ़ हुए। चंदेरी नरेश महाराजा हरीसिंहजी की जय से सारा राजभवन गूंज उठा। एक तरफ महामात्य बलवंतराय का, दूसरी तरफ राज संरक्षक सेठ हजारीमलजी का, उसके बाद खजांची आदि क्रमशः राजप्रमुखों के योग्य आसन लगे हुए थे। राजा हरिसिंहजी ने सबको अपने–अपने आसन ग्रहण करने का आग्रह किया। तब सब अपने–अपने आसनों पर बैठ गये जिससे राजसभा इन्द्रसभा के रूप में परिलक्षित होने लगी।

राजा हरिसिंहजी ने सब पर अपनी दृष्टि प्रसारित की तो सबका हृदय प्रमुदित हो उठा। उसके बाद महामात्य बलवंतराय ने सारे राज्य व उसके निधान के साथ ही सैन्य शक्ति, शस्त्रबल, राज्य के सीमा क्षेत्र व अधीनस्थ अन्य राजाओं, उमरावों आदि का एक–एक करके बड़ी सूक्ष्मता से विवेचन किया जिसको राजा हरिसिंहजी ने गहन गंभीरता से श्रवण करके प्रसन्नता की

अनुभूति की।

साथ ही फरमाने लगे कि यह सब हमारे पूर्वमहाराजाओं की प्रजा वत्सलता का ही सुफल है। अब हमारा परमपवित्र कर्तव्य है कि इस निधान का सारा उपयोग उन्हीं के नाम से ही प्रजा के हितकार्यों में ही व्यय किया जायेगा। इसलिये आज सबसे पहले अपने को इस बात का निर्णय करना है कि जनता के हित में कौन–कौनसे कार्य आवश्यक हैं। उनको प्रारम्भ करके इस राज्य–परम्परानुसार जिसके नाम से यहाँ कुछ भी काम नहीं हुआ है उनकी यादगार में ही उन प्रतिष्ठानों का नामकरण करना है। उसके बाद हमारे स्वर्गीय महाराजा महिपालजी की यादगार में जनता के हितोपयोगी अधिक से अधिक प्रतिष्ठान निर्माण व संचालन में इस राज्य निधान का उपयोग किया जाय। साथ ही, मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि उस निधान में से मैं अपने लिये भोजन व तन ढ़कने हेतु वस्त्र के अलावा एक पैसा भी नहीं खरचूंगा।

यह सुनते ही तो सारे सभासद् आश्चर्यान्वित हो उठे। सबने धन्य–धन्य की आवाज से राजभवन को गूंजा दिया। सब बोल उठेँअहो, इतनी छोटी वय में इतना निर्लेप भाव, हम व हमारा राज्य धन्य हो गया ऐसे निर्लेप शासक को पाकर। तत्क्षण महामात्य ने उसके अनुरूप योजना बनाने का आश्वासन देते हुए अर्ज कीँराजन्, आप अपने

शासन में कैसी व्यवस्था चाहते हैं उसके बारे में भी निर्देश फरमाने का कष्ट करें।

महामात्य के इस आग्रह के उत्तर में महाराजा हरिसिंह ने फरमाया कि प्रजा के हित व सुख–शांति हेतु हर घर में शाकाहार का प्रचार हो। मांसाहार, जुआ, शराब, शिकार, परस्त्रीगमन आदि दुर्व्यसनों का हर परिवार में त्याग हो। किन्हीं अनाथ, गरीब भाइयों, बहनों का कोई नाजायज लाभ नहीं उठावे। हर घर में शिक्षा का प्रचार–प्रसार हो। कोई दीन–दुखी को नहीं सतावे। वृद्ध माता–पिता की सेवा से मुँह नहीं मोड़े। इस राज्य में कोई भूखा नहीं सोये। चोरी, अन्याय आदि प्रवृत्तियों से दूर रहे। हर धर्म के धर्मगुरुओं का पूरा सत्कार, सम्मान हो। हर व्यक्ति अपने इष्टदेव, गुरु की आराधना में स्वतंत्र रहते हुए भी किसी की निंदा व तिरस्कार नहीं करे। हर व्यक्ति को अपने–अपने क्षेत्र में जीवनोपयोगी साधनों के साथ हर क्षेत्र में हर कलाओं के विकास के साधन उपलब्ध हो सकें ऐसी सुव्यवस्था हो, ऐसी मेरी अंतर भावना है। और जो भी समय–समय पर राज्य–विकास हेतु विचार उत्पन्न होंगे उन पर बैठकर परस्पर चिंतन–मनन करके योग्य निर्णय लेंगे। मैं और आप सब अपने–आप को जनसेवा हित समर्पित करते चलें।

(17)

सब राजा हरिसिंहजी के ऐसे उच्च आदर्श भावों को सुनकर प्रसन्नता से झूम उठे और यथा राजा तथा प्रजा की कहावत के अनुसार अपनी–अपनी जगह कर्तव्यपरायण बन कर राज्य–विकास में जुट गये। थोड़े ही समय में चहुँ दिशा में राजा हरिसिंहजी की यश–कीर्ति फैलने लग गई। जिसने भी सुना, सबके हृदय में आ□ाद भाव जाग्रत होने लगा। बहुत–से राजाओं के मन में इनसे अपना प्रीति संबंध जोड़ने की भावना लहलाने लगी जिसके लिये अपनी राजकन्याओं के विवाह हेतु भी आमंत्रण आने लगे। इसके लिये राजमाता, महामात्य और सेठ हजारीमल आदि अन्य राजप्रमुखों ने भी चिंतन किया और राजा हरिसिंह को अर्ज करने लगे।

आप जैसे पुण्यवान राजा को पाकर हमारे राज्य की चहुंमुखी अभिवृद्धि हो रही है और होती रहेगी। लेकिन एक बात सबके दिल में खटकती रहती है कि हमारा रणवास बिल्कुल सूना पड़ा है। राजमाता और हम सब की इच्छा है कि अब आप भी विवाह योग्य हो गये हो और अनेक राजा, महाराजाओं के अपनी कन्या से संबंध स्वीकृत करने हेतु ऊपरा–ऊपरी आमंत्रण आ रहे हैं। इसलिये आप स्वयं पसंद करके स्वीकृति देकर विवाह भी निश्चित कर दें।

राजा हरिसिंहजी ने सबकी बातों को ध्यानपूर्वक सुना, फिर गहन चिंतन करने के पश्चात् बोलेंमेरे पूज्यजनों, मैं तो एक नादान अनाथ बच्चा, जो इस स्टेज तक पहुँचा हूँ, वह सब आप पूज्यजनों का पुण्य प्रताप व आशीर्वाद ही मानता हूँ। साथ ही मैं अपने दिल में यह भी दृढ विश्वास रखता हूँ कि आप पूज्यजनों के आशीर्वाद से जो–कुछ हुआ है वह अच्छा ही हुआ है और जो–कुछ होगा, वह भी अच्छा ही होगा। इसलिये मैं तो फिलहाल विवाह की जीवन में इतनी आवश्यकता नहीं समझता, फिर भी राजमाता, सेठ हजारीमलजी और आप राज्यहित में, मेरे हित में जैसा उचित समझें, वैसा निर्णय करें। उसमें मेरा कोई निषेध नहीं।

राजा हरिसिंहजी के भावों को जानकर सभी को आश्चर्यमय हर्षानुभूति हुई कि एक सर्वसत्तासम्पन्न विशाल राज्य के अधिकारी होकर भी इतनी निर्लेपता, नम्रता। आखिर सबने मिलकर, बैठकर निर्णय लेना ही उचित समझा और राजमाता के महल में पहुँचकर चिंतन करने लगे। महामात्य बलवंतराय ने सबसे पहले एक–एक करके विभिन्न राजाओं द्वारा प्रेषित चित्र व परिचय पत्र निकाले और राजमाता के चरणों में रखकर परिचय बताने लगे। फिर उन राजकुमारियों के चित्र प्रस्तुत किये जो एक से एक सुन्दर और बड़े–बड़े प्रतिष्ठित इक्कीस राजघरानों के थे। उनमें से राजज्योतिषी के विचारानुसार

राजमाता, राजा हरिसिंहजी और चंदेरी नगरी की राशि, ग्रह, नक्षत्र, योग आदि के योग्य नौ राज–कन्याओं हेतु स्वीकृति प्रदान करके विवाह तिथि के साथ समाचार दिलाये गये कि यह विवाह महोत्सव चंदेरी के बाहर प्रकृति की गोद में ही पूर्ण सादगी के साथ ही रचाया जायेगा। क्योंकि हमारे पूर्व महाराजा महिपालजी के स्वर्गवास को थोड़ा काल ही व्यतीत हुआ है और वह शुभ तिथि होगी वैशाख शुक्ला तृतीया।

ऐसे पत्र तैयार करके केसर के छींटे डालकर नौ ही जगह विश्वस्त राजकीय व्यक्तियों के साथ भेज दिये गये। राजपुरुष बड़ी शीघ्रगति से उन–उन स्थानों पर पहुँचे और बड़े अदब के साथ उस–उस राज्य में पहुँचकर राजाओं को भेंट किये, जिनको पढ़ कर सबके मन में हर्ष की लहर छा गई। सब अपना व अपनी लाडलियों का भाग्य सराहते हुए विवाह की तैयारी में जुट गये। साथ ही पत्र लेकर आने वालों को भी सबने बहुमूल्य वस्तुएं भेंट करके विवाह की स्वीकृति प्रदान करके विदाई दी।

(18)

सब जगह से विवाह की स्वीकृति प्राप्त होते ही सारी चंदेरी नगरी में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। राजा महिपाल के विवाह के बाद बहुत लम्बी अवधि के बाद यह अवसर प्राप्त हुआ था क्योंकि उनके कोई सन्तान थी ही

नहीं। राजमाता के तो हर्ष का पार ही नहीं था। राजभवनों के साथ ही सारी नगरी के नर–नारियों में हर्ष की लहर छाई हुई है। सब जाति–वर्ग के लोग अपने–अपने ढंग से विवाह की खुशी जाहिर कर रहे थे। ऐसे आनन्दमय वातावरण में राजा हरिसिंहजी ने सेठ हजारीमलजी को कहाँ पिताश्री, क्या माँ पद्मा व बहन सुमन को समाचार दे दिये ? तब सेठ हजारीमल बोले, समाचार तो नहीं दिये।

तब राजा हरिसिंह बोलेंक्यों नहीं दिये ? उनके आये बिना यह विवाह नहीं हो सकता, इसलिये या तो आप जल्दी से जल्दी उन्हें यहाँ लाने की व्यवस्था कीजिए नहीं तो उनको लाने के लिये मुझे जाना पड़ेगा। तब सेठ हजारीमल बोलेंन तो आपका जाना उचित है, न ही वहाँ किन्हीं कर्मचारियों को भेजना भी। क्योंकि आप जानते हो सारी स्थिति को। इतने बड़े व्यापार को और हवेली आदि को व्यवस्थित किये बिना, किसी के भरोसे छोड़ कर आना संभावित कम है। इसलिये यदि आपका आग्रह ही है तो अभी विवाह के बीच में काफी समय भी है। इसलिये मैं खुद ही जाकर सारी व्यवस्था व्यवस्थित करके उनको भी साथ लेकर आ जाऊँगा।

यह सुनकर राजा हरिसिंह खुश होकर कहने लगेंतब तो आप ही एक बार पधार कर वापिस विवाह के दस दिन पहले आ जायें। जैसे–तैसे वहाँ का सारा कार्य इस तरह व्यवस्थित करके पधारिये कि पुनः बार–बार वहाँ

जाने का झंझट नहीं रहे। साथ ही अपने आस–पड़ोस वालों को व मेरी जन्मभूमि, जो वहाँ से 3 किलोमीटर दूर मोहनपुरा है, वहाँ भी यह शुभ समाचार पहुँचा कर, जो आना चाहें उनकी सारी व्यवस्था राज्य की तरफ से करके उन्हें लेकर पधारने की जिम्मेदारी आपकी है। क्योंकि आप ही इस परिवार व राज्य के मुखिया हैं। लेकिन याद रखना, यदि आप जल्दी नहीं आये तो फिर मुझे वहाँ आना पड़ेगा। इस बात का पूरा ध्यान रखना।

आखिर जैसी आपकी इच्छा कहकर सेठ हजारीमल रवाना होने की तैयारी करने लगे। राजा हरिसिंहजी ने महामात्य बलवंतराय को बुलाकर सारी बात समझा दी। महामात्यजी तो इन बातों में पूरे चतुर और अनुभवी थे। तुरंत–फुरत में पूर्ण राजकीय लबाजमे के साथ राजा हरिसिंह ने माँ व बहन के लिये एक से एक बढ़कर आभूषण आदि की पेटियें भरकर स्वयं नगर के बाहर तक पहुँचाने पधारे। महाराजा पुनः यही आग्रह करने लगे कि यदि आप समय के पहले नहीं पधारे तो मुझे आना पड़ेगा। सेठजी ने कहाँआप चिंता न करें। मैं सब कार्य व्यवस्थित करके समय से पहले ही पहुँचने की कोशिश करूँगा।

अब आप महलों में पधारें ऐसा कहकर राजा हरिसिंहजी को महल की तरफ रवाना करके आप रथ में सवार हुए और जल्दी–जल्दी रास्ता पार करके अहिछत्रा

नगरी के बीच बजार से होकर प्रातः अंधेरे–अंधेरे ही अपनी हवेली के पास पहुँचे। सीधे दरवाजा खोलकर भीतर पहुँचे। एक गवाक्ष से कमरे में झांक कर देखा तो विचार में पड़ गये। सेठानी पद्मा के साथ ही एक युवक चिपक कर सोया हुआ है। यह दृश्य देखते ही उनके क्रोध का ठिकाना नहीं रहा। क्रोध के आवेश में अपने कमर में बंधी तलवार निकालकर उस युवक को मारने हेतु तत्पर हो गये।

इतने में सेठजी को उन पंडितजी से प्राप्त तीसरे अनुभव की स्मृति हो आई। सोचा, ओह मैंने पंडितजी के दो अनुभवों को प्रत्यक्ष देख लिया। अब तीसरे अनुभव में उन्होंने बताया कि दुश्मन को भी बिना चेताये नहीं मारना। इसलिये सेठजी ने उसको चेताने हेतु जोर से आवाज लगाई। सावधान, कौन है तू ? उठ खड़ा हो। ज्योंही सेठजी की आवाज सिंह की दहाड़ की तरह कमरे में गूंजी और उनकी नींद खुली तो एकदम भयभीत होते हुए सामने देखा तो आश्चर्यान्वित होकर चमकते हुए उठी और जोर से बोलींपापाजी, पापाजी आप अचानक कैसे पधार गये। कुछ सूचना ही नहीं दी।

तब सेठ हजारीमल बोलेंअरे ! यह क्या, तूने यह मर्दाना भेष क्यों धारण किया ? यह अच्छा हुआ कि ज्योतिषीजी के अनुभव ने आज बचा दिया नहीं तो आज तेरी मौत निश्चित थी। यह सुनते ही दोनों माँ–बेटी

चौंककर बोलीं"क्या बतावें, आप तो गये सो गये, वापिस आने का नाम ही नहीं लिया। इधर मम्मी रात–दिन चिंतित रहने लगी कि घर में कोई पुरुष नहीं होने से किसी भी समय कुछ भी खतरा उत्पन्न हो सकता है। इसलिये उस खतरे से बचने के लिये मैंने यह मर्दाना भेष धारण कर लिया ताकि घर में पुरुष को देखकर कोई आने की हिम्मत न करे। इतने में बाहर हाथी, घोड़ों व सैनिकों की आवाज सुनकर ज्योंही उधर झांका तो सुमन बोल उठी"पिताश्री, ये हाथी, घोड़े, रथ, सैनिक कहाँ से आये? कहाँ गया हमारा हरिया ? वो आपके साथ दिख ही नहीं रहा है।

यह सुनते ही सेठ हजारीमल अपनी पुत्री सुमन के मुँह पर हाथ रखकर बोले"ऐसा मत बोल, अब वो हरिया नहीं, चंदेरी नगरी के महाराजा हरिसिंह बन गये हैं और अब उनकी वैशाख सुदी तृतीया की शादी है। यह रथ, पालकी सब उन्होंने ही तुम्हें लाने के लिये भेजी है। वहाँ हमारे स्थायी निवास हेतु एक भव्य महल भी नियुक्त कर दिया और मुझे उस राज्य का संरक्षक भी नियुक्त कर दिया है। वे तो खुद ही तुमको लेने के लिये पधारने वाले थे पर मैंने मना कर दिया कि आपका जाना उचित नहीं। बड़ी मुश्किल से आखिर मुझे रवाना किया। मगर उन्होंने यह भी कह दिया कि यदि आप समय पर नहीं पहुँचे तो मैं आ जाऊँगा। साथ ही पास–पड़ौसी व उनकी जन्मभूमि

मोहनपुरा वालों को भी लाने का संकेत किया है और बोले कि इस राज्य की, मेरी और विवाह की सारी जवाबदारी आपकी ही है।

इसलिये अब यहाँ का सारा कारोबार बंद करके वहीं चलना होगा। इसलिये अब जल्दी से जल्दी सारा कारोबार समेट कर चलने की तैयारी करो। सेठ हजारीमल की बात सुनकर सब आश्चर्य करने लगे।

(19)

इतने में आस–पड़ोसी सेठ हजारीमल की हवेली के आस–पास रथ, हाथी, घोड़े, राज–सैनिक खड़े देखकर सब आश्चर्य करते हुए हवेली के पास पहुँचने लगे। धीरे–धीरे काफी भीड़ इकट्ठी हो गई। सब के मन में इसी बात की जानकारी लेने की तीव्र पिपासा जाग्रत हुई कि यह सब क्या नजारा है ? इतने में सेठ हजारीमल भी भीड़ को देखकर बाहर आये और सबका स्वागत करते हुए बोलेंआप बाहर क्यों खड़े हैं ? हवेली के भीतर पधारिये। सेठजी के आग्रह से सब हवेली में पहुँचे और कहने लगेंयह सब राजकीय तामझाम आपके साथ कैसे ? सुना था, आप तो चंदेरी व्यापारार्थ पधारे थे और आपके साथ हरिया भी गया था।

लोगों से हरिया शब्द सुनते ही कहेंमाफ करें, अब आप उसे हरिया कहकर नहीं पुकारें। वे तो अब

चंदेरी नगरी के महाराजा हरिसिंहजी बन गये हैं। और सब राजकीय तामझाम उन्हीं का है। सुनते ही सब आश्चर्यनुभूति करते हुए कहने लगेंआप यह क्या कह रहे हैं ? क्या वही हरिया जो अपनी गलियों में भीख मांगकर जीवन निर्वाह करता था ? यह तो आपकी महानता हुई कि आपने उसको अपने घर में आश्रय दिया। लेकिन आप जो फरमा रहे हैं, इस बात पर सबको आश्चर्य हो रहा है। कृपा करके सारी बात थोड़ी खोल कर समझाने का कष्ट करें। तब सेठ हजारीमल ने यहाँ से रवाना होने से लगाकर पंडितजी के अनुभवों के साथ चंदेरी पहुँचने तक की कथा के साथ बताया कि वहाँ के राजा महिपाल के स्वर्गवास के बाद उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं होने से उसके चयन हेतु पट्टहस्ती की सूंड में गंगाजल से भरा कलश देकर यह निर्णय लिया कि जिस पर यह उंडेल दे उसी को उत्तराधिकारी मान कर उसका राजतिलक करके उसी के हाथ से राजा महिपाल का अंतिम संस्कार करा देना है।

इधर मैंने हरिया को पैसे देकर भोजन लाने बाजार में भेजा तो दरवाजे के पास पहुँचते ही हाथी ने उस पर कलश उंडेल कर अपनी पीठ पर बिठाकर राजमहल में लेके चले गये। मैं उपवन में बैठा इंतजार कर ही रहा था कि कुछ राजकर्मचारी उसके कथनानुसार मेरे पास आये और मुझे राजभवन में लेकर गये। तब सारा

रहस्य मालूम पड़ा, फिर उसका राजतिलक और चंदेरी नरेश का अंतिम संस्कार हुआ। उसके बाद आने लगा तो उन्होंने व सारे राजप्रमुखों ने मुझे राज्य–सरंक्षक का भार सौंप कर रुकने के लिये बाध्य कर दिया। उन्होंने मेरे व परिवार के निवास हेतु एक विशाल सर्वसुविधाओं से युक्त महल ठीक अपने महल के पास ही नियुक्त कर दिया और कह दिया कि अब आपको कहीं जाना नहीं है। माताजी व बहन सुमन को भी मैं खुद जाकर यहीं ले आता हूँ। पर इतने दिन तक तो मैं ही टालता रहा।

मगर अब उनकी वैसाख सुदी तृतीया को शादी होने जा रही है। वैसे तो सगाई बड़े–बड़े राजघरानों से इक्कीस जगह की आई हुई है पर फिलहाल नौ जगह के राजाओं की कन्याओं से विवाह निश्चित किया है। वे सब चंदेरी पधार कर ही अपनी लड़कियों का विवाह करेंगे। इसलिये वे खुद ही सेठानी व बिटिया को लेने आ रहे थे पर मैंने ही मना कर दिया। तब मेरे को इस राजकीय सम्मान के साथ इसी शर्त पर भेजा है कि यदि समय से दस दिन पहले आप नहीं पधारे तो या तो मैं खुद लेने आ जाऊँगा या शादी ही नहीं होगी। साथ ही उन्होंने अपने सारे आस–पड़ौसी मिलने–जुलने वालों को भी जरूर–जरूर साथ लाने का आग्रह किया है। इसलिये मेरा आप सब से भी यही अनुरोध है कि आप सबको भी चलने की तैयारी करना है। साथ ही मोहनपुरा वासी, जो उनके परिवारिक

सदस्य और गाँव के हैं, भले ही उन्होंने उनके साथ दुर्व्यवहार करके माता–पिता की मृत्यु के बाद सारी संपत्ति दबाकर उनको घर से बाहर निकाल कर भीख मांगने को विवश किया, पर उन्होंने तो सब बात भूलकर उनको लाने का आग्रह किया है। यह भाग्य का खेल क्या–क्या चमत्कार दिखाता है, यह तो मैंने अपने मुँह से संक्षेप में बात बताई है। आश्चर्य तो आप तब करेंगे जब प्रत्यक्ष में अपनी नजरों से वह सारा नजारा देखेंगे कि कितने बड़े–बड़े राजा–महाराजा उनकी अधीनता स्वीकार करके हाजरी बजाने हेतु तत्पर हैं।

सेठ हजारीमल के मुँह से सारी बात सुनकर आश्चर्य हुआ और चंदेरी विवाह पर पहुँचने का निश्चय करके मोहनपुरा में भी सब को समाचार पहुँचा दिये। जिसने भी सुना सब आश्चर्य किये बिना नहीं रहे और चंदेरी जाने की तैयारी करने लगे।

(20)

सेठ हजारीमल ने राजा हरिसिंह द्वारा भेजी भेंट सामग्री पत्नी पद्मा और बेटी सुमन को दिखाई। जिसको देखते ही आश्चर्य करते हुए राजा हरिसिंह के जीवन में हुए चमत्कार की प्रशंसा करने लगे उसके बाद सेठ हजारीमल भी जल्दी से जल्दी दुकान, हवेली और व्यापार को व्यवस्थित करने में लग गये। और यहाँ से प्रस्थान की

तिथि भी निश्चय करके सब को चेता दिया कि यहाँ से वैशाख बदी द्वितीया को प्रस्थान करना है। जो साथ चलना चाहे वो चल सकते हैं। उनकी सारी व्यवस्था की जिम्मेदारी मेरी है। उनको किसी प्रकार की तकलीफ उठाने की आवश्यकता नहीं है। यह घोषणा होते ही सब तैयारी में जुट गये।

सेठ हजारीमल ने यह सारी बात अहिछत्रा नगरी के राजा जितशत्रु के पास जाकर भी बताई। वे भी सुनकर के बड़ी प्रसन्नता का अनुभव करते हुए समय पर पहुँचने का आश्वासन देते हुए कहने लगेंसेठ सा. इस विवाह महोत्सव में तो आना ही होगा। चाहे बराती बन कर आयें चाहे घराती बनकर। कन्या पक्ष की तरफ से कई निमंत्रण आये हैं। आपके द्वारा सारी बात सुनकर के वास्तव में मन में यह दृढ़तम विश्वास हो गया कि व्यक्ति का भाग्य कब कैसा चमत्कार दिखा सकता है।

उधर सेठ हजारीमल ने भी अपना कारोबार समेटा और हवेली आदि की व्यवस्था करली। साथ ही अपने ससुराल वालों को भी समाचार कहला दिये जिससे वे भी आश्चर्य करते हुए वहाँ पहुँच गये। साथ ही आस–पड़ोस व मोहनपुरा के भी कई व्यक्ति पहुँच गये जिनकी तीन सौ के लगभग संख्या हो गई। सब बड़े उत्साह–उमंग से आगे बढ़ रहे थे। ज्योंही सब चंदेरी नगरी के बाहर पहुँचे, राजा हरिसिंहजी को सूचना मिली

कि अहिछत्रा नगरी व मोहनपुरा से आपके परिजन, सेठजी का परिवार व आपके जान– पहचान, आस–पड़ोसी और अन्य सेठ–साहूकार सब नगरी के बाहर पधार गये हैं। राजा हरिसिंहजी की प्रसन्नता का पार नहीं रहा। वे खुद सारे राजपरिवार के साथ उनको सम्मान सहित राजघराने में लाये और अपने से बड़ों के चरणों में झुककर नमस्कार करने लगे। सब अपने नयनों से अश्रु बहाते हुए कहने लगेंआप यह क्या कर रहे हैं ?

तब राजा हरिसिंह कहने लगेंक्यों क्या बात है ? क्या मैं आपसे आशीर्वाद लेने योग्य भी नहीं हूँ ? आप यह क्या विचार करते हैं ? जो कुछ हूँ आपके पुण्य प्रताप, आशीर्वाद से ही हूँ। राजा हरिसिंह के इन विनम्र शब्दों को श्रवण करके सभी कहने लगेंयह तो आपकी महानता है कि हमने आपके साथ कैसा दुष्ट व्यवहार किया, कितना कष्ट दिया जिससे आपको भीख मांगने के लिये विवश होना पड़ा। यह तो सेठ हजारीमलजी की महानता थी कि इनकी गहरी परख ने आपको परखा और मानवता के नाते संरक्षण दिया। हमने तो आपके साथ दुर्व्यवहार करने में कोई कसर नहीं रखी। क्या ऐसे व्यक्ति भी आशीर्वाद देने लायक होते हैं ? सच्चे आशीर्वाद प्रदाता और अधिकारी तो सेठ हजारीमल और उनका परिवार हैं।

यह सुनते ही सेठ हजारीमल बोलेंभाई साहब, आप यह क्या कहते हैं ? मैंने क्या किया ? यह तो सब

इनके भाग्य की ही बात है। वही सारा खेल खिलाता है। रंक को राजा बनाना और राजा को रंक बनाना, सब भाग्य का ही खेल है। खैर, आज हम आपको इस रूप में देखकर गौरव की अनुभूति के साथ यह प्रेरणा लेते हैं कि धन, सत्ता, सम्पत्ति के मद में किसी साधारण से साधारण व्यक्ति का भी तिरस्कार नहीं करना चाहिए।

सब की बात सुनकर राजा हरिसिंहजी बोलेंआप ऐसा क्यों सोचते हैं कि आपने मेरे साथ दुर्व्यवहार किया। आपने तो मेरे ऊपर वैसा ही महान् उपकार किया जैसे स्वर्णकार स्वर्ण पर करता है। वह उसको तेज अग्नि की तीक्ष्ण आंच में तपाता है, फिर चोटें मारता है तब उसमें निखार आता है। कुंभकार मिट्टी को भिगोता है, पांवों तले रौंदता है, फिर चाक पर चढ़ा कर घड़ा बनाता है और अग्नि में तपाता है। जो मिट्टी पांवो में रुलती थी, वही मंगल कलश के रूप में सिर पर चढ़ती है। आप अन्यथा विचार मन से निकाल दें और मुझे आप अपने बच्चे के रूप में ही समझें। आज आपको अपने बीच पाकर हर्षविभोर हूँ और अपना अहोभाग्य मानता हूँ कि इस मंगलमय विवाह महोत्सव पर आप पधारे हैं। सत्ता–संपत्ति प्राप्त होना ही सब–कुछ नहीं है। इतना कहकर राजा हरिसिंहजी ने महामात्य आदि सब लोगों को संकेत कर दिया कि यह सब इन्हीं का पुण्य प्रताप व आशीर्वाद का फल है। इनकी व्यवस्था में कोई कमी नहीं रहे इस बात का पूर्ण ध्यान रहे।

राजा हरिसिंहजी की विनम्रता, माधुर्यता आदि सद्गुणों को देखकर सब गद्गद हो गये और लग गये विवाह महोत्सव को मंगलमय बनाने में। श्रेष्ठी हजारीमल व सेठानी पद्मा भी हर्षविभोर हो उठे। जब राजा हरिसिंहजी ने उनके चरणों में मस्तक झुकाया और बहन सुमन पर दृष्टि पड़ी त्योंही उसके गाल पर एक प्रेमभरा चपत मारते हुए बोलेंअरे माँ, यह सुमन तो अब बड़ी हो गई। क्या इसने मुझे पहचाना या नहीं ? यह कहते ही सुमन बोल पड़ींपहचाना क्यों नहीं, तुम तो मेरे हरिया भैया ही हो। मैं तो तुम्हारी याद में कितने आँसू बहाती और कितनी बार खाना भी नहीं खाती। तुम शायद मुझे भूल गये होगे, पर मैं कभी भूली क्या ? पूछ लो मम्मी से। सुमन की बात सुनते ही तो सेठानी पद्मा उस के मुँह पर हाथ रखते हुए बोलींबिटिया, अब ऐसा नहीं बोलते। अब यह हरिया नहीं, महाराजा हरिसिंहजी हैं। तू समझदार है, बड़े आदरसूचक शब्दों से उच्चारण करना चाहिए। लेकिन सुमन तो कहने लगींहोंगे आप सबके महाराजा, मेरे तो ये हरिया भैया ही हैं। इन्होंने मुझे आप से भी ज्यादा प्यार दिया। गोदी में ही उठाये रखते। क्या भैया के सम्बन्ध से महाराजा का सम्बन्ध बड़ा होता है ?

यह सुनते ही महाराजा हरिसिंह ने उसे पुनः स्नेह भरी दृष्टि से देखा और चल पड़े उस महल की तरफ जो सेठजी के आवास हेतु नियुक्त किया गया था।

पीछे–पीछे सेठ–सेठानी चल पड़े। महल में पहुँचते ही बोलेंअब मेरी प्यारी बिटिया सुमन इस महल में ही रहेगी और विवाह की सारी रस्में भी राजमाता के आशीर्वाद से यहीं सम्पन्न होंगी। बस, इतना कहते ही तो विवाह योग्य मंगल सामग्रियों से महल सुशोभित होने लगा। मंगल गीतों की गु□जार होने लग गई। एक–एक कर विवाह की सब रस्में अदा होने लगी। राजमाता की प्रसन्नता का कोई पार नहीं था, तो सेठानी पद्मा भी हर्षविभोर थी। साथ ही राजा हरिसिंहजी के निकट सम्बन्धी थे, उनको भी इस मंगल रस्म की अदायगी में शामिल किया गया जिससे उनके मन में भी कोई अन्यथा विचार न आये। कुल मिलाकर सारे राजभवन के साथ पूरी चंदेरी नगरी में हर्ष की लहर व्याप्त हो रही थी। सब संबंधी राजा–महाराजा भी अपनी पुत्रियों को विवाह हेतु लेकर चंदेरी पहुँचने लगे। साथ ही दोनों पक्ष के संबंधी राजा–महाराजा भी।

(21)

सारी चंदेरी नगरी दुल्हन की तरह सज कर मानो आने वाली राजकुमारियों से प्रतिस्पर्धा करती हुई यह प्रगट कर रही थी कि जैसे तुम महाराजा हरिसिंह का वरण कर अपने–आप को भाग्यशाली बनाना चाहती हो। उससे भी महान सौभाग्य तो मेरा है कि आपसे पहले ही मैंने इसका वरण कर लिया है। उसके बाद ही आपको व

आपके माता–पिता को इनके महिमामंडित जीवन की सौरभ प्राप्त करके आकर्षण पैदा हुआ है। सारी चंदेरी में राजमाता से लगाकर सगे–संबंधी, प्रजा के आबाल–वृद्ध, सब के मन में एक अजीब–सी खुशी की अनुभूति हो रही थी।

इसी खुशी के माहौल में वह वैशाख शुक्ला तृतीया जो प्रभु ऋषभ के पारणे के निमित्त अक्षय तृतीया के रूप में प्रख्यात हुई थी, वह प्रस्तुत हो गई। आज प्रातःकाल से ही सबकी एक ही दिशा बनी हुई थी। लोग अब धीरे–धीरे नगरी के बाहर वन में प्राकृतिक सौन्दर्य से संयुक्त विशाल प्रांगण जिसका इस पावन विवाह महोत्सव के उपलक्ष्य में "श्री महिपाल मंगल विवाह मंडप" नाम रखा गया था, उसमें एकत्रित होने लगे।

वहाँ की सारी जमीन को कृत्रिम लौन के सदृश गलीचों से सजाया गया था। बीच–बीच में अष्ट मंगल के प्रतीक बने हुए थे। उसके ऊपर विशाल शामियाना उसकी महिमा बढ़ा रहे थे। एक तरफ विशाल तंबू से बने हुए सर्वसुविधाओं से युक्त राजगृह निर्मित किये गये। जिनमें राज–कन्याओं के साथ ही उनके स्वजन–स्नेहियों की सुन्दर व्यवस्था की गई। उसके बाद विशेष आमंत्रित राजा–महाराजा, जिनमें बहुत–से तो वे राजा–महाराजा थे, जो अपनी पुत्रियों का महाराजा हरिसिंहजी से विवाह करना चाहते थे। उनके आवासों की व्यवस्था की गई थी। उसके एकदम मध्य से विवाह मण्डप सजाया गया था।

उसके पास मंगल वाद्य एवं गीत गुंजरित करने वालों का स्थान व विवाह मण्डप में बैठने वाले दोनों पक्ष के निकट सम्बन्धियों की व्यवस्था रखी गई थी। फिर आगे आगन्तुकों के जलपान की व भोजन की व्यवस्था रखी गई थी। जिसमें सैकड़ों स्टालें विभिन्न मनमोहक खाद्य पदार्थों व पेय पदार्थों से सजी हुई थी। जिनमें से हर व्यक्ति अपनी इच्छा अनुरूप खाद्य पदार्थों का आनन्द ले सके।

फिर एक विशेष सुसज्जित मंडप, जिसमें राजा–महाराजा, दोनों तरफ से निकट सज्जन–स्नेहियों के लिये उनके अनुरूप भोजन आदि की सुव्यवस्था रखी हुई थी। चंदेरी निवासी सबका सत्कार–सम्मान करने में दत्तचित्त बने हुए थे।

इधर सूर्य धीरे–धीरे अस्ताचल की ओर ढलने लगा और इधर चंदेरी के राजभवन से बारात सज–धजकर मंगल मुहूर्त में मंगल गीतों व वाद्य यंत्रों की गुंजार के साथ प्रस्थान होने लगी व महाराजा हरिसिंजी राजमाता व सेठ हजारीमल, माता पद्मा और निकट संबधियों का आशीर्वाद लेकर पट्टहस्ती पर सवार होकरके चंदेरी के मुख्य राजमार्गों से होती हुई मुख्य द्वार से होकर ज्योंही बाहर निकली तो "श्री महिपाल मंगल विवाह मंडप" से मंगल गीतों की एवं वाद्य यंत्रों की गुंजार होने लगी। तब राजकन्याओं के पक्ष की महिलाएं एवं पुरुष बारात की अगवानी हेतु पहुँच गये। सब के मन में अपार हर्ष छाया

हुआ था। वर–राज महाराजा हरिसिंहजी को देख कर सब अपनी व अपनी पुत्रियों का भाग्य सराहने लगे। परस्पर सबका स्नेह मिलन हुआ। और बारात तोरण द्वार पर पहुँची और तोरण की रस्म अदा कर वर–राज को विवाह मंडप में ले जाया गया।

उसके साथ ही नौ ही राजकन्याओं को अपने–अपने पारिवारिक राजपुरुष एवं महिलाओं ने लाकर वर–राज महाराजा हरिसिंहजी के सिंहासन के पास बिछे भद्रासनों पर बिठा दिया। फिर राजपंडितों के मंगल मंत्रोच्चारण के साथ ही साथ क्रमशः सबने स्वर्ण थालों में सजी वरमालाएं अपने हाथों से वर–राज के गले में पहनायी। वर–राज महाराजा हरिसिंहजी ने भी नौ ही राजकन्याओं के गले में अपने हाथ से वरमाला पहनाकर पास पड़ी स्वर्ण डिब्बी से सिंदूर लेकर सबकी मांग पूरी। उसके साथ ही मंगल गीतों व वाद्य यंत्रों की ध्वनि गूंज उठी।

सबने दिल खोलकर प्रीतिदान दिया और विशाल प्रीतिभोज के साथ विवाह विधि सम्पन्न हुई। हर पक्ष के सामान्य जन तो उसके बाद प्रस्थान कर गये। लेकिन नौ ही राजकन्याओं के माता–पिता एवं निकट संबन्धियों के साथ जिन–जिन राजाओं के अपनी–अपनी राज कन्याओं हेतु संबंध करने के उद्देश्य से पत्र व चित्र आये थे, उन सबको सेठ हजारीमल ने आग्रह करके राजभवन पधारने

का निमंत्रण दिया, जिसको स्वीकार करके वहाँ से वर–राज के साथ ही अपनी–अपनी कन्याओं की डोलियों सहित राजभवन में पहुँचे। सेठ हजारीमल व उनकी पत्नी पद्मादेवी ने आरती उतार कर राजभवन में मंगल प्रवेश कराया। बहिन सुमन ने भी वर–राज की आरती उतार कर वर राजा का द्वार रोककर खड़ी हो गई। तब वर–राज महाराजा हरिसिंहजी ने अपने गले का दिव्य हार उसके गले में डालकर बड़े प्रेम से पुनः उसके गाल पर चपत मार कर उसको हटाकर राजमहल में प्रवेश किया।

वहाँ मंगल रस्मों की अदायगी के साथ ही सबसे पहले राजमाता के चरणों में जाकर महाराजा हरिसिंहजी ने अपना शीष झुकाया। उसके बाद नौ ही महारानियों ने परिचय पाकर अपना शीष झुकाकार आशीर्वाद प्राप्त किया। राजमाता ने सब का मुँह मीठा कराके खूब फूलने–फलने और राज्य की आप से वृद्धि हो, ऐसा मंगल आशीर्वाद दिया। बाद में सब विशाल सभा मंडप में इकट्ठे हुए और वहाँ सज्जित भव्य सिंहासनों पर आसीन हुए। सामने के भव्य स्टेज पर बीच में वर–राज महाराजा हरिसिंहजी और उनके दोनों और लगे भद्रासनों पर महारानियां विराजमान हुई।

सबसे पहले महामात्य बलवंतरायजी राज्य की तरफ से सबका स्वागत करके सम्मान करते हुए बोलेंआज लम्बे अंतराल के बाद हमारे राजभवन में विवाह की मंगल

शहनाई गूंजी है। हमारा अंतेउर आज इन नवीन महारानियों के पांवों के घुंघरुओं की झनकार से झंकृत हुआ है, जिसकी सारे राज्य में खुशी छाई हुई है। इनका सारा श्रेय हमारे राज्य संरक्षक श्रेष्ठिवर्य श्री हजारीमलजी व उनके परिवार का है। इनकी कृपा से ही हमको ऐसे विनम्र, मृदुस्वभावी, शांत–दांत, महापराक्रमी महाराजा प्राप्त हुए हैं। इसलिये आपके साथ ही हम इनका भी महान् आभार मानते हैं।

(22)

इतने में सेठ हजारीमल खड़े हुए और सबका स्वागत करते हुए बोलने लगेंसमस्त आगन्तुक स्नेही स्वजनों, मैं आज इस मंगल प्रसंग पर सबका अभिवादन करते हुए नम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि अभी हमारे महामात्यजी ने आप सबका स्वागत करते हुए इस मंगल महोत्सव के साथ मेरा नाम जोड़ा। वह तो महाराजा हरिसिंहजी व महामात्य बलवंतरायजी की महानता है। पर मैं तो इसे सारा भाग्य का खेल व चमत्कार ही मानता हूँ। एक छः वर्ष का बालक, जिसके माता–पिता गुजर गये, निकट परिवारिक सदस्यों ने भी धन–सम्पत्ति पर कब्जा कर अनाथ भिखारी बना कर सड़कों पर छोड़ दिया। एक बार अचानक मेरी पत्नी की दृष्टि पड़ी, न मालूम किस भव के स्नेह का तार जुड़ा, उसकी मातृ

ममता जगी और अपने घर पर रख लिया। मैंने तो केवल मानवता के नाते ही इनको संरक्षण दिया।

इसके बदले इन्होंने पुत्रवत् हमारी सेवा की और मेरे हृदय में विश्वास पैदा किया और छायावत् मेरे हर कार्य में सहयोगी बनते हुए यहाँ चंदेरी भी आवश्यक कार्य हेतु आना हो गया। उसी के पहले दिन चंदेरी के महाराजा महिपालजी का अकस्मात् स्वर्गवास हो गया। उनके कोई उत्तराधिकारी नहीं होने से महामात्य की सूझबूझ से योजना बनी और पट्टहस्ती को सजाकर उसकी सूंड में गंगाजलभरे स्वर्ण–कलश को रखकर, इस निर्णय के साथ घुमाने लगे कि जिस भाग्यशाली के सिर पर पट्टहस्ती इस कलश को उंड़ेल दे, उसी को राज्याधिकारी अर्थात् राजा मानकर राजतिलक कर देना। इसी उद्देश्य से पट्टहस्ती घूमने लगा और मुख्य द्वार के बाहर आने लगा।

इतने में मैंने इनको कुछ रुपये देकर नगरी में भोजन लेने हेतु भेजा। मेरी आज्ञा को पाकर, नत मस्तक होकर एक विनीत सेवक की भांति रवाना होकर द्वार के पास पहुँचा ही था कि पट्टहस्ती ने हर्षध्वनि की, चिंघाड के साथ स्वर्ण–कलश से इनका अभिषेक करके सूंड में पकड़ कर अपनी पीठ पर रखे सिंहासन पर बिठा दिया और इन सबने इनका राज्याभिषेक कर दिया। मुझे तो मालूम ही तब पड़ा जब इनके निर्देशानुसार राज–सेवक आकर मुझे

महल में लाये और सारी बात बताई। इनके भाग्योदय के साथ हमारा भाग्योदय भी जुड़ा, इसी कारण आज मुझे ये पिता की तरह ही मानकर राज्य के संरक्षक के रूप में निर्धारित करके सम्मान दे रहे हैं। इस लिये मैं पूरे इस घटनाक्रम से यही प्रेरणा लेता हूँ कि सत्ता–सम्पत्ति के मद में बेभान होकर किसी भी साधारण से साधारण व्यक्ति को भी तिरस्कार व तुच्छता की दृष्टि से नहीं देखना व समझना चाहिए क्योंकि पता नहीं कब किसका भाग्य क्या चमत्कार दिखावे ?

आज मुझे इनको देखकर सात्त्विक गौरवानुभूति होती है कि एक महान् शासक में जो गुण होने चाहिए, वे सब प्रवर्धमान हैं। इतनी छोटी वय में भी इनकी गांभीर्यता, मृदुता, विनयशीलता, न्यायप्रियता, प्रजावत्सलता व वीरता के सद्गुणों से अल्प समय में ही इनका प्रभाव दिन दूना व रात चौगुना प्रवद्धित हो रहा है और उसमें महान् अभिवृद्धि हुई हैंआपकी राजकन्याओं के साथ इनका विवाह करके। वैसे तो इक्कीस जगह से पत्र व चित्र आये हुए थे। इनमें से नौ जगह की स्वीकृति देकर यह विवाह महोत्सव रचाया गया है लेकिन मेरा अन्तरमन चाहता है कि "आई गृहलक्ष्मी ठुकराना उचित नहीं है।" इस लोकोक्ति को सन्मुख रखते हुए उन सभी राजा–महाराजा, जिनमें करीब–करीब सभी यहाँ उपस्थित हैं, उन सबकी हार्दिक इच्छा का सम्मान करते हुए उन

सब की राजकन्याओं का सम्बन्ध स्वीकार करता हूँ। वे क्रमशः पधार कर सगाई दस्तूर की रस्म अदा करके आषाढ़ सुदी नवमी को इसी तरह, इसी "महिपाल मंगल विवाह मंडप'' में पधार कर विवाह की रस्म अदा कराने की कृपा करावें। साथ ही आप सब निकट सम्बन्धियों से भी नम्र निवेदन है कि उस पावन अवसर पर पुनः पधार कर विवाह मंडप की शोभा बढ़ावें।

यह सुनते ही तो सारे सभामंडप में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। सबने क्रमशः अपनी राजकन्याओं की सगाई का दस्तूर कर के आनन्द की अनुभूति प्रकट की। साथ ही अनेक नये राजाओं ने भी अपनी राजकन्याओं का सगाई दस्तूर कर दिया जिनकी संख्या 22 हो गई।

इस माहौल को देखते हुए महाराजा हरिसिंह भी अपने को नहीं रोक सके और खड़े होकर बड़े मधुर शब्दों में निवेदन करने लगे कि इस खुशी के माहौल में मैं अपनी तरफ से ही सेठ साहब की पुत्री और मेरी प्यारी बहन सुमन का भी विवाह सम्पन्न कराना चाहता हूँ। इसके लिये मैं अहिछत्रा नगरी के राजा जितशत्रुजी के सुपुत्र अजितशत्रु के साथ बहिन सुमन का सगाई दस्तूर करना चाहता हूँ। आप पधारें और यह दस्तूर स्वीकार करें। अकस्मात् राजा जितशत्रु यह बात सुनकर हर्षविभोर हो गये और अपने पुत्र युवराज अजितशत्रु के साथ सगाई का दस्तूर करके विवाह की भी स्वीकृति प्रदान कर दी। चारों तरफ खुशी

की लहर व्याप्त हो गई और सब कहने लगेंवाह रे अहिछत्रा नगरी की महिमा ! उसमें खेला, पला, पोषा एक तो चंदेरी नरेश बन गया और दूसरी अहिछत्रा नगरी की राजरानी। सब भाग्य के चमत्कार की करामात समझ कर हर्षानुभूति के साथ अपने–अपने राज्य की तरफ प्रस्थान कर गये।

(23)

पुनः सब आषाढ़ सुदी नवमी की तैयारी कर उसी "महिपाल मंगल विवाह मंडप" में पहुँचने लगे। आज इस मंडप में पूर्वापेक्षा विशेष रूप से विवाह के दो मुहूर्त निर्धारित किये गये। एक तो गोधूलिका मुहूर्त, जिसमें सबसे पहले महाराजा हरिसिंहजी ने बहिन सुमन की राजा जितशत्रु के सुपुत्र अजितशत्रु के साथ, अपनी शादी की धूम–धाम से भी बढ़ कर शादी निवृत्त करके दिल खोल के प्रीतिदान की घोषणा की। फिर अपनी शादी के लिये ब्राह्म मुहूर्त में विवाह मंडप में मंगल प्रवेश किया और भव्य सिंहासन पर आसीन हुए। पास में अपने नव विवाहित बहन व बहनोई के सिंहासन भी लगा दिये और पास ही पूर्व विवाहित रानियों के भी भद्रासन लगा दिये। सब उन पर बैठ गये। इधर कुल बाईस जगह की राजकन्याओं को अपने–अपने राजपरिवार के पुरुष व महिलाओं ने लाकर सामने लगे भद्रासन पर बिठा दिया और तत्क्षण राजपंडितों द्वारा मंत्रोच्चारण के साथ सबने

स्वर्ण थालों में सजी वरमालाएं उठाई और वर–राज को क्रमशः पहना दी। फिर वर–राज ने भी सबके गले में वरमाला पहनाकर क्रमशः सभी की मांग सिंदूर से भर दी।

उसी समय बहिन सुमन ने अपनी नई भाभियों की आरती उतारी और पूर्व विवाहित नौ ही महारानियों ने अपनी बहनों का अर्थात् पतिदेव की नई रानियों का स्वागत करते हुए सगी बहनों की तरह गले मिलीं और वहाँ से अन्य जनसाधारण के प्रस्थान के बाद सब सगे–सम्बन्धियों के साथ राजभवन में प्रवेश किया। मंगल रस्म आदायगी के बाद सबने एक साथ राजमाता के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया और पुनः विशाल सभा मंडप में पहुँच गये। महामात्यजी ने व सेठ हजारीमलजी ने सबका स्वागत किया तो सम्बंधित राजपरिवार ने सेठजी का आभार प्रकट किया।

उसी माहौल वाले महोत्सव में महाराजा हरिसिंह ने इन इकतीस रानियों में से सबसे बड़ी रानी प्रभावती को पटरानी पद से सुशोभित किया और उनके लिये विशेष महल की व्यवस्था की। बाकी सबके लिये उचित महलों की व्यवस्था करके सारी अंतेउर की देखभाल की जिम्मेदारी सेठ हजारीमल के ऊपर डाल दी।

उसके बाद बहिन सुमन की विदाई की तैयारियाँ प्रारम्भ हुई। राजा हरिसिंहजी ने अपनी सगी बहन के रूप में ही सुमन को दिल खोल कर प्रीतिदान दिया और फिर

सेठ–सेठानी से कहौंफरमाइये और जो भी इच्छा हो दिल खोल कर अपने हाथ से प्रीतिदान दीजिये। यह सारा राज्य आपका ही है। साथ ही अपनी इकतीस ही रानियों को भी संकेत किया कि मेरे तो बहन मानो और भाई मानो, यह एक ही है। आप अपनी प्यारी ननद को और ननदोई को जो भी प्रीतिदान देना चाहें वे अपने पास से उदारता के साथ दे सकती हैं। पतिदेव के संकेत के साथ ही अपनी प्यारी ननद एवं ननदोई को अपने पीहर से आई प्रिय से प्रिय और बहुमूल्य वस्त्र आभूषणों की भेंट का ढेर लगा दिया जिसको देखकर सब आश्चर्यान्वित हो गये।

सेठ हजारीमल और सेठानी पद्मा तो भावविभोर होते हुए कहने लगेंबेटी सुमन, तेरे भैया ने तो अपने भाग्य के साथ तेरा और हमारा भी भाग्य पलट दिया। हम धन्य हो गये ऐसे लाल को पाकर। शायद उदर से जन्म लेने वाली संतान भी ऐसा होती या नहीं। बस, अब यह संबंध दृढ से दृढतम बना रहे ताकि हमको मरते दम निश्चिंतता बनी रहे। उसके बाद बड़ी धूम–धाम से सुमन को विदाई देते हुए राजा हरिसिंहजी बोलेंअब अहिछत्रा नगरी से भी मेरा वही सम्बन्ध रहेगा जैसा चंदेरी का है क्योंकि यहाँ तो मैं आया हूँ पर वहाँ का तो मैं जाया हूँ।

दोनों तरफ से बड़ी आत्मीयता के साथ विदाई हुई। सेठ हजारीमल व माँ पद्मा यों तो मन में हर्षित हो रहे थे कि हमारी बेटी जिस भूमि में जन्मी उसी भूमि के

महारानी पद को सुशोभित करने जा रही है। पर बेटी की विदाई तो बेटी की विदाई ही होती है और फिर एक ही बेटी। दोनों का हृदय फट पड़ा। बड़ी मुश्किल से राजा हरिसिंहजी भी अपने अश्रु वेग को रोक कर सेठ–सेठानी को लेकर बड़ी दूर तक साथ जाकर राज्य सीमा से बाहर पहुँचाकर विदाई देकर राजमहल में पहुँचे।

(24)

अब राजा हरिसिंहजी का अंतेउर इकतीस–इकतीस महारानियों व हजारों दास–दासियों के आने–जाने व कल्लोल–क्रीड़ाओं से बड़ा आनन्ददायक लग रहा था। सेठ हजारीमल सब को अपनी पुत्रबहुएँ ही मानकर हर पल उनके सुख–दुःख की बात सुनने व उनकी आवश्यकताओं की जानकारी लेकर उनकी पूर्ति में तत्पर बने रहते। समय मिलने पर राजसभा में भी पहुँचकर यथायोग्य सलाह मशविरा करके राज्य की विकट समस्याओं को सुलझाने में राजा हरिसिंहजी को सहयोग देते रहते। उनकी पैनी दृष्टि प्रतिपल सचेत रहती कि राज्य गौरव की बढ़ती यशकीर्ति में किसी प्रकार की आंच नहीं आवे, सदा शील, सदाचार की बहार बहती रहे। साल दो साल में तो अंतेउर बच्चों की किलकारियों से गूंजने लगा। राजमाता के साथ ही सारे राज्य में आनन्द मंगल की बहार छा गई।

सेठ हजारीमल की सारे राज्य में ही नहीं, सगे–सम्बन्धी राज्यों में ही क्या, अब तो सारी अहिछत्रा नगरी में भी प्रतिष्ठा बढ़ गई थी क्योंकि अहिछत्रा नगरी के राजकुमार उनके दामाद जो थे। जब भी अहिछत्रा नगरी पधारना होता तो सारे नगर के लोग एवं स्वयं राजा जितशत्रु आदि उनके स्वागत हेतु तत्पर रहते। वहाँ भी उनकी राज प्रतिष्ठा वैसी ही बन गई जैसी चंदेरी नगरी में थी।

थोड़े समय बाद पुत्री सुमन के भी जुड़वां दो पुत्र पैदा होने से तो और ज्यादा आनन्द की अनुभूति होने लगी। सेठ हजारीमल से भी ज्यादा राजा हरिसिंहजी ने अपने पुत्रों से भी बढ़कर उत्साह एवं धूमधाम से उनका जन्मोत्सव मनाया।

चारों तरफ चंदेरी राज्य की यश–कीर्ति की महिमा फैल रही थी। चारों तरफ हर्ष का वातावरण छाया हुआ था। चारों ओर सेठ हजारीमल की प्रतिष्ठा की छाप जमी हुई थी। राजा व प्रजा, सब उनका पूर्ण आदर–सम्मान करते थे। सेठ हजारीमल भी "ज्यूं–ज्यूं भीजे कामली, त्यों–त्यों भारी होय" की कहावत के अनुसार जितनी–जितनी यश–प्रतिष्ठा बढ़ी, उतने–उतने ही विनम्र, मधुर व पापभीरु होते हुए दानशील, तप भावाराधन में सजग बनकर आराधन करने लगे। सेठानी पद्मा भी समय–समय पर राजमाता की कुशलक्षेम पूछने आया–जाया करती और राजरानियों के महलों में भी

जाकर अपनी पुत्रबहुओं की तरह ही लाड़–प्यार व कुशलक्षेम की बातें कर लेती। साथ ही राजकुमारों को अपने ही पौत्र समान गोदी में लेकर लाड लडाती। पटरानी सहित अन्य सभी महारानियाँ भी उनको अपनी सगी सास ही मानकर पूरा मान–सन्मान देती और विनय–भक्ति बजाती। यदा–कदा बेटी सुमन का पीहर में आना हो जाता तो सारा माहौल ही कुछ अलग बन जाता। सेठानी पद्मा से भी ज्यादा खुशी उन रानियों के मन में छा जाती। सब अपनी सगी ननद के समान ही एक–एक दिन के लिये बारी–बारी से अपने महलों में रखती। पूरे मन के कोड पूरती, साथ ही उसके बच्चों को अपने बच्चों से भी ज्यादा लाड़–दुलार करती।

जब दामाद अहिछत्रा नगरी के राजकुमार अजितशत्रु का आगमन हो जाता तो वह माहौल कुछ और ही हो जाता। स्वयं राजा हरिसिंहजी अपने सगे बहनोई के समान ही उनका आदर–सत्कार करने में सारी राज्य– व्यवस्था का कार्यक्रम बदल देते। बिचारी सेठानी पद्मा तो लालायित होकर मुँह ताकती ही रहती कि कब मुझे भी मौका मिले ताकि मैं अपने महल में भी जमाई व बेटी के लाड–कोड करूँ। पर अवसर ही नहीं मिल पाता। फिर भी अपनी इस एकाएक लाडली के इस प्रकार

मान–सम्मान को देखकर फूली नहीं समाती। स्वयं सुमन भी भैया हरिसिंहजी की कृपा का ही सारा फल मानती। हरिसिंहजी ही क्या, सारा राज्य सेठ हजारीमलजी के एहसान से दबा रहता।

(25)

लेकिन कहावत है सब समय एक समान नहीं रहता। सूर्य की प्रातः, सुबह, शाम तीन बार दशा बदलती है। समय और संयोग से वैसे ही सेठ हजारीमलजी के जीवन में एक आश्चर्यकारी घटना के निमित्त से एकदम ऐसा परिवर्तन आया कि सब आश्चर्य करने लगे।

हुआ यों कि प्रतिदिन की तरह अपने कर्तव्य का पालन करते हुए सब राजबहुओं की कुशलक्षेम, सुख–दुख की बातों को सुनकर उनके पुत्र–पुत्रियों को अपने पौत्र–पौत्रियों की तरह ही लाड़–दुलार करते हुए राजमाता की भी कुशलक्षेम पूछने हेतु उनके महल में अचानक पहुँच गये। उनके कहीं किसी जगह जाने–आने की रुकावट तो थी नहीं, इसलिये बेरोक–टोक पहुँच गये। लेकिन ज्योंही राजमाता के मुख्य कक्ष में झांका तो एकदम सहम गये। वे देखते क्या हैं कि राजमाता के पास महामात्य बलवंतराय सोये हुए हैं। ऐसा देख कर पहले तो विश्वास नहीं हुआ परन्तु गहराई से देखने पर बात यथार्थ मालूम पड़ी। एक बार तो क्रोधावेग इतना इतना भड़क गया कि

अभी भंडा–फोड़ कर दूँ।

पर उनको उसी समय उन पंडितजी का बताया चौथा अनुभव याद आ गया। वह था कि किसी की लज्जा को उघाड़नी नहीं, ढकनी चाहिए। तीनों अनुभवों के चमत्कार तो उन्होंने देख ही लिए थे। अब इसमें भी क्या चमत्कार छिपा हुआ है उसको जानने हेतु उन्होंने पास पड़े कम्बल को उठाया और उन दोनों पर ढककर बाहर निकल गये। अभी महल के बाहर भी नहीं निकले थे कि राजमाता ने यह सारा दृश्य देखकर जल्दी से महामात्यजी को जगाकर सारी बातें बताते हुए पिछवाड़े से रवाना कर दिया और अपने पाप पर पर्दा डालने हेतु उसने अपने शरीर पर नाखून घड़ कर, कपड़ों को अस्त–व्यस्त करके जोर–जोर से आँसू बहाते हुए आवाज लगाई। अरे दौड़ो–दौड़ो ! पकड़ो ! सेठ हजारीमल को। इस दुष्ट को राजाजी ने भी इतना सिर चढ़ा दिया है कि उससे उन्मत्त बना हुआ मेरी इज्जत लूटने को हावी हो गया। यह तो मैं ही थी जो अपने शील की रक्षा कर सकी।

राजमाता की यह आवाज सुनते ही तो सारे राजमहल में हो–हल्ला हो गया। तुरन्त सेठ हजारीमल को पकड़ कर राजा हरिसिंहजी के पास ले जाकर खड़ा कर दिया और कहने लगेंराजन् ! देखिये, सेठ हजारीमलजी की करतूतों को। चलकर देखिये राजमाता के महल में,

उनके साथ उन्होंने क्या व्यवहार किया है ? राजा हरिसिंह को इन बातों पर यकायक तो कुछ विश्वास नहीं हुआ। लेकिन जो कर्मचारी सेठ हजारीमल को पकड़ कर लाये उनके अर्ज करने पर घटनास्थल पर जाकर निरीक्षण करना अनिवार्य हो गया। वे उसी समय राजमाता के महल की तरफ चल पड़े। ज्योंही महल के भीतर पांव दिया तो वहाँ कुहराम मचा हुआ था। राजमाता चिल्ला रही थी। अहा ! मेरे पतिदेव के अकस्मात वियोग से दुखित इस अबला का अब क्या होगा ? अच्छा होता मैं पतिदेव के साथ सती हो जाती। अहो ! मुझे क्या मालूम इस सहानुभूति के पीछे ऐसी दुर्भावना है। यह ठीक हुआ, मैं संभल गई, नहीं तो यह तो ऐसा मौका देखकर ही आया था कि जिस समय मैं अकेली अपने कक्ष में होऊँ जिससे इसकी दाल गल जाय। इसके लिये इसने पूरा जोर भी लगाया। पर परमात्मा की कृपा से बच गई।

अब तो इस दुष्ट को अपनी दुष्टता का ऐसा फल मिलना चाहिए कि आगे से ऐसी दुष्टता करना ही भूल जाय। ऐसा कहकर वह पुनः जोर–जोर से चीख मार कर रोने लगी। राजा हरिसिंहजी ने सारी बात का गहराई से जायजा लिया तो उसमें उनके त्रिया चरित्र की गंध आई। फिर भी उसको मन में दबाकर बोलेंराजमाता, आप धैर्य धारण करें। मैं अभी जाकर सारी बात का निरीक्षण करके

न्याय–नीति के अनुसार जो भी बड़ा से बड़ा दंड होगा उसकी व्यवस्था करूँगा। आप यदि शुद्ध हो तो आपको आगे कुछ सोचने की आवश्यकता ही नहीं है। ऐसा राजमाता को आश्वस्त करके पुनः राजसभा में पधारे।

(26)

ज्योंही राजा हरिसिंहजी राज सभा में पधारे राजसेवकों ने सेठ हजारीमल को ला करके सामने खड़ा किया। राजा हरिसिंहजी ने उनके चेहरे का गहराई से अध्ययन किया तो उस पर कोई विकार या विवाद की रेखा परिलक्षित नहीं हुई। साथ ही मैंने अपने बचपन से लगाकर आज तक कभी इनके बारे में ऐसी कोई बात नहीं सुनी। फिर भी राज्य के नियमानुसार कार्यवाही करना तो आवश्यक है।

ऐसा सोचकर उन्होंने सेठ हजारीमलजी को संबोधित करते हुए फरमाया कि सेठ साहब, इसके बारे में आपको क्या कुछ कहना है। लेकिन सेठ हजारीमल ने मंद मुस्कान भरते हुए मौन के अलावा अन्य कोई उत्तर नहीं दिया। एक बार, दो बार, तीन बार पूछने पर भी सेठजी की तरफ से बचाव रूप कोई भी प्रतिक्रिया सामने नहीं आई। वे उसी शांत मुद्रा में खड़े रहे। आखिर अनेक प्रयत्न करने पर भी जब कोई दलील या उत्तर नहीं मिला

तब राजकीय नियमानुसार राजा हरिसिंहजी को सेठजी के लिये जेल का आदेश देना पड़ा। जेल का आदेश हो जाने पर भी उसी शांत मुद्रा में बिना कुछ प्रतिक्रिया के जेल भी चले गये।

यह सब देखकर राजमाता प्रसन्नता का अनुभव करने लगी कि चलो, मैंने अपनी होशियारी से अपने पाप पर पर्दा डाल दिया। इधर महामात्य बलवंतराय भी सोचने लगे कि राजमाता की होशियारी से मैं भी बाल–बाल बच गया। मगर राजा हरिसिंहजी ने सेठजी को जेल का आदेश तो दे दिया पर भीतर से सबको साफ–साफ चेता दिया कि सेठजी को केवल नजर में रखा जाय। सेठजी से कोई भी मिलना चाहे तो बिना रोक–टोक मिलने दिया जाय। साथ ही मेरे अलावा अन्य किसी राजकर्मचारी को, चाहे महामात्यजी ही क्यों न हो, वहाँ नहीं जाने दिया जाय और किसी प्रकार की तकलीफ ना हो, इसका पूरा ध्यान रखा जाय।

इधर भीतर ही भीतर पूर्ण विश्वस्त गुप्तचरों को पूर्ण सावधानी के साथ निर्देश दिया कि तुम राजमाता की हर प्रवृत्ति पर निगरानी रखते हुए सारी सूचना मुझे यथाप्रसंग दिया करो। गुप्तचर भीतर ही भीतर अपना काम कर रहे थे। इधर कुछ दिन निकलते–निकलते सारी बात सामान्य हो गई। राजा हरिसिंह ने अंतेउर के साथ ही सेठानी पद्मा को भी सावधान कर दिया था कि वे इस

घटना के प्रति कोई चिंतन नहीं करते हुए बिल्कुल सामान्य रहें। कहावत है "पाप छिपाया नहीं छुपे, छुपे न मोटा भाग। दाबी दूबी नहीं रहे, रुई लपेटी आग" के अनुसार कुछ ही दिन बाद राजमाता और महामात्य के अवैध संबंधों का सिलसिला चालू हो गया। राजमाता तो मन में इतनी निश्चिंत थी कि मैंने ऐसी होशियारी से कार्य किया है कि अब किसी की हिम्मत नहीं हो सकती कि मेरे पर दृष्टि डाल सके। लेकिन पाप का घड़ा तो एक दिन फूटना ही है।

हुआ वही। एक दिन गुप्तचर विभाग ने राजा हरिसिंह को सूचना दी कि महामात्यजी राजमाता के भवन में उनके मुख्य कक्ष में हैं। यह बात सुनते ही महाराजा चुपचाप रवाना हुए और ऐसे ढंग से महल में पहुँच कर कक्ष के पास खड़े हो गये और भीतर का सारा दृश्य अपनी आँखो से देखा। फिर साथ के गुप्तचर विभाग ने जोर से आवाज लगाई कि सावधान ! महाराजाधिराज पधार रहे हैं, राजमाता के चरण स्पर्श करने। ज्योंही यह आवाज सुनी, राजमाता और महामात्यजी एकदम घबरा गये। देखा, चारों तरफ से कक्ष को घेरा हुआ था। कहीं बाहर निकलने की गुंजाइश ही नहीं थी। महाराजा हरिसिंह ने ज्योंही कक्ष में प्रवेश किया, दोनों हक्के–बक्के रह गये। अब क्या होशियारी दिखा सकते थे ? सारी

बात का पर्दाफाश हो गया था। इधर सेठ हजारीमलजी को भी लाकर खड़ा कर दिया।

(27)

राजा हरिसिंहजी ने राजमाता और महामात्यजी को कहौंकहिये सेठ हजारीमलजी के बारे में आपके क्या विचार हैं ? क्या उस दिन वास्तव में सेठजी ने आपकी इज्जत लूटने का प्रयास किया था ? अब क्या उत्तर दें। ऐसा लग रहा था कि जमीन फट जाय तो उसमें समा जायें। इससे स्पष्ट हो गया कि सेठजी एकदम निर्दोष हैं और उन दोनों के मुँह से भी स्पष्ट कहला दिया। राजा हरिसिंहजी को तो पहले ही सेठजी के चरित्र पर कोई तिलमात्र भी संशय नहीं था।

मगर आश्चर्य इसी बात पर हो रहा था कि इतनी बात स्पष्ट हो जाने पर भी सेठ हजारीमलजी उसी गंभीर मुद्रा में मौन ही धारण किये हुए हैं। तब राजा हरिसिंहजी ने उनको मौन खोलकर सारी बात स्पष्ट रूप से खोल कर रखने का अत्याग्रह किया। तब सेठ हजारीमल बोलेंराजन् मेरा कभी किसी के छलछिद्र देखने का या मौका देख कर किसी को अपमानित करने का, किसी के पाप का भांडाफोड़ करने का लक्ष्य ही नहीं रहा। मेरा तो एक ही लक्ष्य रहा और है कि आपकी जो यश–कीर्ति फैली हुई है, वह उत्तरोत्तर बढ़ती रहे।

मैं तो आपके सौंपे हुए उत्तरदायित्व का वहन

करते हुए निस्पक्ष भाव से प्रतिदिन की तरह हर बहूरानी व महलों की देखभाल, सार–संभाल, सुख–सुविधा व आवश्यकता की जानकारी लेते हुए राजमाता के भवन में भी पहुँच गया। लेकिन मुख्य कक्ष में ज्योंही यह दृश्य दृष्टि में आया, मैं हक्का–बक्का रह गया। एक बार मन में इतना रोष आया कि उसी समय इनका भंडाफोड़ कर दूं। पर मुझे उन पंडितजी की बात याद आ गई जो शायद आप तो उनको भूल गये होंगे। तत्काल महाराज हरिसिंहजी बोलेँ आप क्या बात करते हैं ? सेठ साहब उनको क्या कभी भुला सकते हैं। अपन बग्घी में बैठकर चंदेरी आ रहे थे। उस दिन रास्ते में मिले थे, तब आपने ही आग्रहपूर्वक उनको बग्घी में बिठाया था। फिर उनसे अनुभव सुनाने का आग्रह किया था जिसके बदले पहले अनुभव का एक रुपया लेकर उन्होंने बताया था कि आप अभी यात्रा में चार हैं लेकिन मेरा अनुभव कहता है कि इस यात्रा में पाँच का अंक होना श्रेयकर है, चाहे वह शैला ही हो। फिर आपने रस्ते में पड़े उस शैले को देखकर मुझे उठाने हेतु कहा। तब मैंने उठाकर बग्घी में रखा जिसने आपकी भयंकर सर्प से रक्षा की। दूसरा अनुभव किसी को साधारण समझ कर भी उसकी उपेक्षा नहीं करना। तीसरा अपने दुश्मन को भी बिना चेताये नहीं मारना। जिसके दूसरे अनुभव में दो रुपये और तीसरे अनुभव के चार रुपये आपने दक्षिणा के भेंट किये। फिर

चौथे अनुभव हेतु आठ रुपये भेट करके सुनाने का आग्रह करने लगे। पर उनका गाँव नजदीक आ जाने पर वह मुझे बग्घी रोकने का आग्रह करने लगे। उस कारण पूरा सुन नहीं पाया था।

तब सेठजी राजा हरिसिंहजी की याददास्त पर आश्चर्यान्वित हुए बिना नहीं रहे और कहा गजब की आपकी याददाश्त है। मैंने तो सोचा इतने ऊँचे पहुँचने के बाद इनको यह बात क्या याद होगी। तब राजा हरिसिंह बोलेंसेठ साहब, जिन बातों से जीवन का इतना गहरा सम्बन्ध जुड़ा हुआ है एवं उन बातों के अनुभवों ने ऐसे चमत्कार दिखाये हैं, वे बातें क्या कभी भूली जा सकती हैं ? मुझे तो कई बार बीच में उस सैले की, बग्घी की और घोड़ों की भी याद आती रही। साथ ही आप और हम जिस कार्य के लिये चंदेरी आये, उन रामदयालजी की खोज कराने की भी बात याद आती रही। पर एक से एक आगे से आगे जो स्थितियाँ पैदा हुई, उनमें उलझते ही गये। इसलिये अब जो चौथा अनुभव पंडितजी ने बताया वह आप ही बताकर इस घटना के साथ उसका क्या सम्बन्ध जुड़ा है, उसका स्पष्टीकरण से अवगत करावें।

तब सेठ हजारीमलजी बोलेंराजन् वह चौथा अनुभव पंडितजी ने बताया कि किसी भी बुरी से बुरी बात को भी ढक देनी लेकिन प्रकाशित नहीं करनी। इसी की स्मृति आते ही मैं इनके पास पड़े कम्बल को इन पर डाल कर

मौन धारण करके निकलने लगा लेकिन राजमाता ने जो कुछ भी षड्यंत्र रचा वह सब आपने देख लिया और उन्ही के पापकर्म ने इनका भांडा फोड़ा। मैं तो इसको ढक कर ही रखना चाहता था।

सेठजी की इस बात को श्रवण करके राजमाता और महामात्य दोनों भारी पश्चात्ताप करते हुए चरणों में गिर कर माफी मांगने लगे और इस दुश्कर्म की शुद्धि हेतु महामात्य के पद का त्यागकर इस बात को गुप्त रखने का आग्रह करके संयम लेकर आत्मशुद्धि करने का संकल्प करके तैयारी करने लगे। राजन् और श्रेष्ठी हजारीमलजी ने भी पूर्ण आश्वस्त करके धर्माराधन में सहयोग देने की भावना व्यक्त कर आश्वस्त कर दिया। कुछ ही दिनों में बात भीतर ही भीतर दब गई।

(29)

अब राजा हरिसिंहजी अधिकांश समय सत्संग, धर्माचरण और दान–पुण्य के साथ ही प्रजा के सुख–दुःख की बात सुनकर यथायोग्य व्यवस्था करके उनको सहयोग देने में ही समय व्यतीत करने लगे। क्योंकि अब बहुत–से राजकुमार सर्वकलाओं में निपुण होकर आ जाने से राज्य व्यवस्थाओं में भी सहयोग मिलने लग गया था। अनेक राजकुमारों को उनके ननिहाल पक्ष के राजाओं ने, पीछे अन्य संतति के अभाव में अपने दोहित्रों को ही राजतिलक

करके अपने उत्तराधिकारी घोषित कर दिये। कई राजकुमारों ने अपने–अपने पुरुषार्थ–पराक्रम से अनेक राज्यों पर अपने अधिकार जमा लिये थे। शेष राजकुमार, जिनको कइयों को अपने ससुराल पक्ष में उत्तराधिकारियों की रहितता में अपने–अपने राज्यों के अधिकारी बना दिये। सबसे छोटे राजकुमार, जो सबसे छोटी रानी का था, का यौवन वय में विवाह करके अपने हाथों से ही राज्याभिषेक करके अपने पूर्ण उत्तरदायित्व से निवृत्त हो गये।

संयोगवशात् चंदेरी नगरी के भाग्योदय से विशिष्ट ज्ञानी महामुनिराज धर्मधुरन्धरजी का आगमन हुआ। उनका सत्संग सत्सान्निध्य पाकर अंतर्मन में संसार से विरक्ति उत्पन्न हो गई। मन में संयम ग्रहण करने की तीव्र तमन्ना जाग्रत हो गई। सबसे पहले सेठ हजारीमल के सामने अपनी भावना प्रस्तुत की। तब वे बोलेंराजन् ! आप अपना इतना विशाल राज–वैभव छोड़ कर मोक्षमार्ग पर चरण बढ़ा रहे हैं तो फिर हम पीछे क्यों रहेंगे। हमारे तो सर्व मनोरथ आपने सफल कर ही दिये। अब तो आत्मकल्याण का पथ ही हमारे लिये श्रेयस्कर है। जब अपने ये विचार अंतेउर में पटरानी व अन्य रानियों के सामने प्रस्तुत किये तो उनमें से अनेक रानियां जिन्होंने पोत्रों का मुँह देख लिया था, उनको खिला–पिला कर मन की मुराद पूरी कर ली उन्होंने भी संयम ग्रहण करने का विचार बना लिया।

जब ये समाचार उनके पीहर में पहुँचे तो उनके माता–पिता भी विचार करने लगे। जब हमारे बेटी–दामाद सब सुख–वैभव का परित्याग करके संयम पथ पर आरूढ़ हो रहे हैं तो अब हमको क्या करना। उनके पुत्रों ने ही हमारे सिर का भार हल्का करके सारी राज्य–व्यवस्था संभाल ली है। तो फिर हम पीछे क्यों रहे। इधर अहिछत्रा नगरी के राजा जितशत्रु और उनकी महारानी ने भी सुना कि हमारे सम्बन्धी दोनों सब सुख–वैभव छोड़कर संयम पथ पर आरूढ़ हो रहे हैं तो हम पीछे क्यों रहे। साथ ही दोनों राज्य के अनेक श्रेष्ठी, कर्मचारी, साथ ही राजा हरिसिंहजी के पारिवारिक जन, उन्होंने भी सुना तो सब के मन में एक ही विचार बना कि ऐसे भाग्यशाली सेठ, सेठानी व राजा हरिसिंह सब सुख–वैभव का परित्याग कर आत्मकल्याण हेतु अग्रसर हो रहे हैं तो हम पीछे क्यों रहे।

इधर राजमाता और महामात्य तो पहले से ही तैयार थे। इस तरह बात ही बात में सैंकड़ों भव्य प्राणी संयम पथ पर बढ़ने हेतु तत्पर हो गये। सब एक साथ आचार्य धर्मधुंरधरश्री मुनीराज के मुखारविन्द से संयम ग्रहण करके कठोर तप का आराधन करके मोक्षमार्ग के पथिक बने।

समाप्त